अनुराग

बाल पत्रिका

त्रैमासिक

अप्रैल-जून 2007

मूल्य : 10 रुपए

अप्रैल-मई-जून की कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ

8 अप्रैल (1857)

1857 के स्वाधीनता संग्राम के प्रथम विद्रोही मंगल पाण्डे को ब्रिटिश हुकूमत द्वारा फाँसी

8 अप्रैल (1929)

'बहरों को सुनाने के लिए धमाके की जरूरत होती है', इस उद्घोष के साथ भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने दिल्ली की सेंट्रल असेम्बली में बम फेंका

9 अप्रैल (1893)

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन का जन्मदिवस

13 अप्रैल (1893)

जालिम रौलट एक्ट के विरोध में अमृतसर के जालियाँवाला बाग में शान्तिपूर्ण सभा कर रहे लोगों पर ब्रिटिश फौज के जनरल डायर ने अंधाधुंध गोलियाँ चलवाईं जिससे सैकड़ों स्त्री-पुरुष व बच्चे मारे गये। इस दिन को जगह-जगह दमन विरोधी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

14 अप्रैल (1963)

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन की पुण्यतिथि

18 अप्रैल

चटगाँव विद्रोह । बंगाल (अब बंगलादेश) के चटगाँव शहर में मास्टर सूर्यसेन के नेतृत्व में तरुण क्रान्तिकारियों के दल ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह कर दिया और शस्त्रागार पर कब्जा कर लिया।

22 अप्रैल (1870)

रूसी क्रान्ति के महान नेता व्लादिमीर इलिच लेनिन का जन्मदिवस

1 मई

अन्तरराष्ट्रीय मजदूर दिवस : 8 घण्टे काम के दिन की माँग को लेकर 1886 में शिकागो में शहीद हुए मजदूरों की याद में इस दिन दुनिया भर के श्रमिक अपने हक के लिए लड़ने का संकल्प लेते हैं।

5 मई (1818)

कम्युनिस्ट विचारधारा के संस्थापक महान चिन्तक और क्रान्तिकारी कार्ल मार्क्स का जन्मदिवस

5 मई (1911)

चटगाँव विद्रोह की नायिका-प्रीतिलता वाडेदार का जन्मदिवस

8 मई

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जन्मदिवस

10 मई

अंग्रेज हुक्मरानों के खिलाफ, 1857 में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की शुरुआत।

17 मई

महान गणितज्ञ और चिन्तक बट्रेण्ड रसेल का जन्मदिवस

19 मई

वियतनाम के महान क्रान्तिकारी नेता हो चि मिन्ह का जन्मदिवस

20 मई (1929)

भगतसिंह के वरिष्ठ साथी, हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के नेता भगवतीचरण वोहरा बम का परीक्षण करते समय शहीद हो गये

25 मई

महान बंगला कवि काजी नजरुल इस्लाम का जन्मदिवस

11 जून (1857)

महान देशभक्त क्रान्तिकारी, काकोरी केस के शहीद रामप्रसाद बिस्मिल का जन्मदिवस

अनुराग
बाल पत्रिका

त्रैमासिक, वर्ष 12, अंक 2
अप्रैल-जून 2007

सम्पादक
कमला पाण्डेय

सह सम्पादक
अभिनव सिन्हा

सज्जा
रामबाबू

स्वत्वाधिकारी कमला पाण्डेय के लिए यशकरण लाल द्वारा डी-68, निराला नगर, लखनऊ से प्रकाशित तथा मुद्रक बाबूराव बोरकर द्वारा शान्ति प्रेस, नयागाँव (पश्चिम), लखनऊ से मुद्रित।

सम्पादकीय कार्यालय
डी-68, निरालानगर
लखनऊ-226020
फोन : (0522) 2786782

इस अंक का मूल्य : 10 रुपए
वार्षिक सदस्यता : 48 रुपए
(डाक व्यय सहित)

इस अंक में

संवाद

प्यारे बच्चो,

इस बार 'अनुराग' जब तक तुम लोगों के हाथों में पहुँचेगा, तब तक तुम्हारे स्कूल खुल चुके होंगे और तुम लोग अपने दोस्तों से छुट्टियों के दिनों में की गयी मौज-मस्तियों के बारे में खूब बातें करते होंगे। इतने दिनों बाद मिलने में तो इतनी बातें इकट्ठी हो गयी होंगी कि खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही होंगी। नये-नये दोस्त तो तुमलोग बना ही रहे होंगे।

नयी-नयी किताबें, कॉपी, यूनिफार्म सबकुछ नया, कितना मजा आ रहा होगा।

तुम्हारे इस मजे में तुम्हारे साथ तुम्हारी ये नानी भी शामिल होना चाहती है तो जल्दी से कलम उठाओ और अपने छुट्टी के अनुभव के बारे में लिख भेजो। किसी दृश्य ने यदि आकर्षित किया हो तो उसे भी बनाकर भेजो। नानी के साथ-साथ 'अनुराग' के सभी पाठकों को भी तुम्हारे अनुभव और चित्रों से परिचित कराया जायेगा।

प्यार सहित,

तुम्हारी नानी,
कमला पाण्डेय

पोस्ट बॉक्स

आदरणीय नानी जी,

सादर प्रणाम। पत्रिका का नया अंक मिला। पढ़कर अच्छा लगा। कहानियों में 'बड़े बाबा' बहुत अच्छी थी। लघुकथाओं में रावेंद्रकुमार रवि की 'बच्चे ने सैर की' बेतुकी लगी। इसमें न कोई रोचकता थी और न ही इस कहानी से मनोरंजन हुआ। न जाने क्यों आपने इसे क्या सोचकर प्रकाशित किया? आपको इसमें क्या अच्छा लगा। कविताओं में निकोलस ग्वेन की 'दो बच्चे', दुर्गा प्रसाद शुक्ल की कविता 'बचपन' मन को भा गयी। अनुराग बाल कम्यून की कलम से में 'एक सपना', 'एक छोटी लड़की और उसका मालिक', 'टेलीफोन की घण्टी' आदि अच्छी लगी। जानकारियाँ काफ़ी ज्ञानवर्धक लगी। हम भी एक बाल कम्यून बनाना चाह रहे हैं। इसके लिए क्या शर्तें हैं? कृपया अवगत कराए।

आपका अभिषेक पुनेठा

आदरणीय नानी,

सादर प्रणाम

विगत कुछ समय से एक बात महसूस कर रहा हूँ कि पत्रिका का झुकाव क्रान्तिकारी बाल एवं किशोर साहित्य की तरफ़ न होकर बच्चों के मनबहलाव मात्र की रचनाओं एवं कविताओं की तरफ़ हो रहा है। इसका नुकसान यह है कि पत्रिका की रोचकता में गिरावट आयी है।

कोई दो-एक वर्ष पूर्व (शायद अप्रैल-जून'03) की गर्मियों में जो अनुराग का अंक मिला था उसमें लेनिन के बारे में एक संस्मरण छपा था, जिसका नाम था 'क्रान्ति के प्रथम शब्द' इसके लेखक थे 'विक्टर तेल्पजगोव'। इसमें एक लड़की होती है 'पाशा', वह क्रान्ति बाद के अपने रूस को आगे बढ़ने में सहयोग देती है। इसमें यह दिखाया गया है कि क्रान्ति और लेनिन के कारण जार के जुल्म से सताये हुए लोगों में कैसा उत्साह आ जाता है, कोई कुछ भी हुनर जानता हो, मसलन टाइपराइटर चलाना, वह हर छोटे से छोटे कार्य द्वारा भी नये समाज की रचना में अपना सहयोग दे स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा था।

आपका विप्लव

नन्हे गुदड़ीलाल के साहसिक कारनामे

—सुन यओच्युन

किसी समय फिङफिङ नाम की एक छोटी-सी लड़की के पास कपड़े का एक नन्हा गुड्डा था, जिसका नाम था गुदड़ीलाल। बच्चो, क्या तुम जानना चाहते हो कि इस गुड्डे का साथ अचानक फिङफिङ से कैसे छूट गया और उसने रेल की यात्रा कैसे की? इस सवाल का जवाब तुम्हें इस लम्बी कहानी में मिलेगा।

अब तक पढ़ा...

जाड़े की रात थी, काफ़ी समय हो चुका था। फिङफिङ ने गुदड़ीलाल को लिहाफ से ढककर सो गई और सोने से पहले उसने गुदड़ीलाल से कहा कि हमलोग सुबह जल्दी उठकर शिशुशाला जाएँगे। सुबह ठण्ड बहुत थी, गुदड़ीलाल को बाहर जाने पर ठण्ड लग सकती थी क्योंकि गुदड़ीलाल सिर्फ़ हल्की-सी जाकेट पहने था। फिङफिङ ने माँ से कहकर गुदड़ीलाल के लिए एक कोट बनवा दिया। गुदड़ीलाल उसे पहनकर बहुत खुश हुआ। उसे पहनकर वह शिशुशाला गया। शाम को वे शिशुशाला से वापस आ गए। रात में भोजन करते समय गुदड़ीलाल ने उछल-कूद कर चावल का कटोरा जमीन पर गिरा दिया। इससे फिङफिङ बहुत नाराज़ हो गई और गुदड़ीलाल को अनाज बर्बाद करने के लिए डाँटा। इस मामूली-सी गलती पर इतनी डाट-फटकार से गुदड़ीलाल नाराज हो गया और उसने तय किया कि अब वह फिङफिङ के पास नहीं रहेगा। तओतओ लड़के के पास चला जाएगा।

अब आगे...
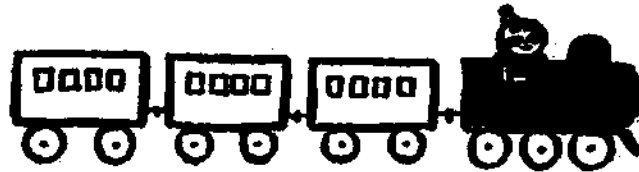
7. फिङफिङ का साथ छूटा

गुदड़ीलाल ने पक्का इरादा कर लिया कि वह फिङफिङ का साथ छोड़ देगा। दूसरे दिन फिङफिङ गुदड़ीलाल को अपने साथ शिशुशाला ले गई। उस समय उसे भागने का मौका नहीं मिला। शाम को जब घर लौट रहे थे, तो रिक्शागाड़ी में फिङफिङ की जेब में बैठा-बैठा वह भागने की तरकीब सोचने लगा।

उसने सोचा, अगर मैं किसी तरह फिङफिङ की जेब से नीचे गिर जाऊँ, तो रिक्शागाड़ी में फिर एक बार शिशुशाला पहुँच जाऊँगा। वहाँ पहुँचकर मैं तओतओ की खोज शुरू कर दूँगा। पर यह काम मुझे बड़ी सफाई से करना चाहिए जिससे फिङफिङ को बिलकुल पता न चले। अगर पता चल गया, तो वह मुझे हरगिज नहीं जाने

देगी। सवाल है, इस तरकीब पर अमल कैसे किया जाए?

तभी रिक्शागाड़ी रूक गई। ड्राइवर ली चाचा ने सबसे पहले छोटे बच्चे को नीचे उतारा। वे दूसरे बच्चों को उतारने ही वाले थे कि छोटे के रोने की आवाज़ सुनाई दी। वह बरफ पर गिर पड़ा था। ज्योंही फिङफिङ ने रोने की आवाज़ सुनी, वह एकदम रिक्शागाड़ी से नीचे उतर गई।

"यह मेरे लिए एक अच्छा मौका है!" गुदड़ीलाल ने मन ही मन सोचा। "अगर मैं जरा भी बहादुरी दिखाऊँ, तो इस लड़की से पिण्ड छुड़ा सकता हूँ!"

फिङफिङ के नीचे कूदते समय गुदड़ीलाल उसकी जेब से रिक्शागाड़ी में गिर पड़ा। तब तक ड्राइवर ली चाचा बच्चे को उठा चुके थे। फिङफिङ उसके कपड़ों से बरफ झाड़ने लगी।

"रोओ मत," उसने बच्चे को ढाढ़स बँधाते हुए कहा। "आओ, हम दोनों एक साथ घर चलते हैं।"

ली चाचा ने छोटे बच्चे की उँगली पकड़ ली और उसे फाटक तक पहुँचा आए।

"अच्छा, चाचा जी नमस्ते! कल मिलेंगे!" दोनों बच्चे एक साथ बोल पड़े।

ली चाचा रिक्शागाड़ी में लौट आए और शिशुशाला की तरफ़ चल पड़े। गुदड़ीलाल पर उनकी नजर बिल्कुल नहीं पड़ी।

फिङफिङ को भी बिलकुल पता नहीं चला कि गुदड़ीलाल उसकी जेब से गिर गया है।

इस तरह गुदड़ीलाल और फिङफिङ का साथ छूट गया।

8. अब कहाँ?

रिक्शागाड़ी खाली हो चुकी थी और वह बड़ी तेज़ रफ़्तार से चल रही थी। गुदड़ीलाल मन ही मन बहुत खुश था।

"अब तो मैं तओतओ को अवश्य खोज निकालूँगा," उसने सोचा।

वह मन ही मन मुस्करा रहा था। ज्योंही रिक्शागाड़ी

सड़क के एक मोड़ पर पहुँची, गुदड़ीलाल सन्तुलन खो बैठा और फिसलकर सीट के नीचे गिर गया।

कुछ समय बाद रिक्शागाड़ी फिर एक बार रुक गई। गुदड़ीलाल को ली चाचा के पैरों की आहट सुनाई दी। पर धीरे-धीरे वह आहट कम होती गई। ली चाचा जा चुके थे।

"अब क्या होगा?" बेचारा गुदड़ीलाला सोच में पड़ गया। "शायद मुझे आज रात रिक्शागाड़ी में ही रहना पड़ेगा।"

अब उसकी खुशी गायब हो चुकी थी। उसे डर लगने लगा था। अँधेरा हो चला था। कोट के अन्दर भी उसे ठण्ड महसूस हो रही थी। बदन को गेंद की तरह सिकोड़कर वह चुपचाप सीट के नीचे लेट गया।

"कोई बात नहीं," उसने सोचा। "आज रात यहीं सो जाऊँगा। कल सुबह ली चाचा आएँगे, तो उनके साथ तओतओ के पास चला जाऊँगा। जैसे भी हो, अन्त में उसे अवश्य खोज लूँगा।"

अब गुदड़ीलाल को ज़्यादा परेशानी नहीं हो रही थी। कुछ ही देर में उसकी आँख लग गई। रिक्शागाड़ी

के चलने से अचानक उसकी नींद खुल गई। रिक्शागाड़ी फिर कहाँ जा रही है? क्या उसे तओतओ फिर मिल पाएगा?

कुछ देर चलने के बाद रिक्शागाड़ी मोड़ पार करके एक बड़े-से फाटक के अन्दर चली गई। रिक्शागाड़ी की खिड़की से रोशनी अन्दर आने लगी। रोशनी इतनी तेज़ थी कि गुदड़ीलाल की आँखें चौंधिया गईं। पर थोड़ी ही देर में फिर अँधेरा छा गया और रिक्शागाड़ी रुक गई।

गुदड़ीलाल के कानों में लोगों के बोलने, इंजन के चलने और लोहे के टकराने की आवाज़ें पड़ने लगीं।

"ली, तुम यहाँ क्या करने आए हो?" एक भारी-सी आवाज़ ने पूछा।

"तुम लोग यहाँ इतना महत्वपूर्ण काम कर रहे हो। भला मैं कैसे बैठा रहता?" ली चाचा ने जवाब दिया।

"तुम दिनभर बच्चों को शिशुशाला या घर पहुँचाने के लिए रिक्शागाड़ी चलाते-चलाते थक चुके हो। यह तुम्हारे आराम का समय है।"

"मैंने सुना है, मशीनों की ढुलाई के लिए तुम लोगों के पास गाड़ियाँ बहुत कम हैं। इसलिए चला आया हूँ।"

"लेकिन यह तो बच्चों की रिक्शागाड़ी है।" एक अन्य तीखी-सी आवाज़ आई। "इसके छोटे-से दरवाज़े से इतनी बड़ी मशीनें अन्दर कैसे जा सकेंगी?"

"इसकी फिक्र न करो! यह दरअसल एक बहुप्रयोजन रिक्शागाड़ी है!" भारी-सी आवाज़ ने कहा। "इसकी सारी बॉडी को अलग किया जा सकता है।"

गुदड़ीलाल कुछ भी नहीं समझ पा रहा था। उसे केवल नट-बोल्ट निकाले जाने की आवाज़ सुनाई पड़ रही थी। अचानक उसे ठण्ड महसूस होने लगी। उसने ऊपर की तरफ़ देखा तो हैरान रह गया। ऊपर असंख्य तारों से भरा आसमान लटक रहा था।

ली चाचा ने रिक्शागाड़ी की बॉडी हटाने के बाद उसकी सीटें भी हटा दीं। इस तरह वह एक रिक्शाठेले में बदल गई। गुदड़ीलाल उसके बीचोंबीच लेटा हुआ था।

वह परेशान होकर चिल्लाया : "ली चाचा, मैं यहाँ हूँ!"

पर शोरगुल के बीच ली चाचा को उसकी आवाज़ नहीं सुनाई दी। वे एक तरफ़ मुड़कर दूर चले गए।

कुछ देर बाद ली चाचा चार छोटे पायों वाली एक काली-सी लोहे की चीज़ उठा लाए। उसे उन्होंने रिक्शाठेले

पर लाद लिया। दबने से बचने के लिए गुदड़ीलाल फुर्ती से एक तरफ़ हट गया। फिर भी उसका नया कोट किसी चीज़ से अटककर गायब हो गया। काफ़ी खोजबीन करने पर भी वह उसे नहीं मिल पाया।

कुछ और भारी-भरकम चीज़ें रिक्शाठेले में लाद दी गईं। फिर ली चाचा उसे चलाने लगे।

गुदड़ीलाल ने सामने नजर डाली, तो तीन बड़े-बड़े ट्रक दिखाई दिए। उनकी तेज़ रोशनी सड़क पर पड़ रही थी। उसने पीछे देखा। उसके रिक्शाठेले के पीछे उसी तरह के बहुत से रिक्शाठेले चल रहे थे। इस तरह गाड़ियों का एक लम्बा-सा काफिला बन गया था।

गुदड़ीलाल ठण्ड से ठिठुरता जा रहा था, रिक्शाठेला बहुत-सी काली चीज़ों से भरा पड़ा था। उनमें कोई भी चीज़ ऐसी नहीं थी जो एक भी शब्द बोल सकती हो।

"हे भगवान, हम कहाँ जा रहे हैं?" उसने परेशान होकर कहा।

"हम रेलवे-स्टेशन जा रहे हैं," एक भारी-सी आवाज़ ने जवाब दिया।

गुदड़ीलाल को बड़ा आश्चर्य हुआ। यह आखिर किसकी आवाज़ थी? ली चाचा तो तेज़ी से रिक्शाठेला चला रहे थे। उन्हें भला बात करने की फुरसत कहाँ थी? तो फिर यह आवाज़ किसकी थी? क्या यह चार छोटे पायों वाली उस काली-सी मशीन की आवाज़ तो नहीं थी, जिसके नीचे दबने से वह बाल-बाल बच गया था।

"तुम कौन हो?" उसने घबराकर पूछा।

"मैं एक छोटा बिजली-जनरेटर हूँ," काली-सी मशीन ने मैत्रीपूर्ण आवाज़ में जवाब दिया।

अब गुदड़ीलाल का डर खत्म हो चुका था। इसलिए उसने शिकायत की : "अरे भाई, तुमने तो मुझे कुचल ही दिया था। मेरा कोट भी न जाने कहाँ गायब हो गया है। लगता है, तुम्हें जरा भी तमीज नहीं है! मैं तुमसे बिलकुल नहीं बोलना चाहता!"

"अगर तुम्हें मेरे कारण कष्ट पहुँचा है, तो मुझे माफ कर दो! दरअसल मैंने तुम्हें देखा ही नहीं था!" जनरेटर की आवाज़ से अब भी दोस्ती झलक रही थी। "कारख़ाना रोशनी से जगमगा रहा था। इसलिए बाहर आने पर मुझे साफ़-साफ़ दिखाई नहीं दिया। जब कभी तुम रोशनी से अँधेरे में जाते हो, तो क्या तुम्हें भी ऐसी ही हालत का सामना नहीं करना पड़ता?"

गुदड़ीलाल को लगा, जनरेटर ठीक कह रहा है। उसने विषय बदलते हुए कहा :

"तुमने अभी अपना नाम क्या बताया था?"

"छोटा बिजली-जनरेटर।"

"बिजली-जनरेटर क्या होता है?"

"यह एक तरह का यंत्र होता है।"

"मैं भी तो एक तरह का यंत्र हूँ," गुदड़ीलाल ने डींग मारी।

"क्या तुम भी एक यंत्र हो?" जनरेटर ने आश्चर्य से पूछा।

"तुम क्या सोचते हो? क्या तुम्हारे अलावा कोई और यंत्र नहीं हो सकता?" गुदड़ीलाल ने गुस्से में जवाब दिया।

"नहीं, नहीं, मेरा यह मतलब कतई नहीं था!" जनरेटर बोला। "मेरा मतलब था...। खैर, यह तो बताओ तुम किस तरह के यंत्र हो?"

"फिङफिङ कहती है, मैं एक ड्राइवर हूँ। ड्राइवर गाड़ी चलाता है। यंत्र भी किसी चीज़ को चलाता है। इसलिए मैं भी एक यंत्र हूँ!" गुदड़ीलाल ने दलील दी।

"लेकिन ड्राइवर तो आदमी होता है," जनरेटर ने आपत्ति की।

"बिलकुल ठीक। लेकिन मैं आदमी होने के साथ-साथ यंत्र भी हूँ!" गुदड़ीलाल ने उत्तर दिया।

जनरेटर को हँसी आने लगी। लेकिन उसने अपने पर काबू रखा। उसे डर था कि कहीं गुदड़ीलाल फिर नाराज न हो जाए।

"तुम क्या काम करते हो?" गुदड़ीलाल ने पूछा।

"मैं? पम्प चलाता हूँ।"

"किसलिए?"

"ताकि पम्प से खेतों का फालतू पानी बाहर निकाला जा सके।"

"खेतों से फालतू पानी बाहर क्यों निकाला जाता है?" गुदड़ीलाल उसकी बात नहीं समझ पा रहा था।

"अगर लगातार पानी बरसता रहे," जनरेटर ने विस्तार से समझाया, "तो खेतों में पानी ही पानी भर जाता है और फसल डूब जाती है, ऐसी हालत में अगर फालतू पानी बाहर निकाल दिया जाए, तो फसल अच्छी होती है।"

"अच्छी फसल से क्या फायदा होता है?"

"अगर फसल अच्छी होती है, तो अनाज के ढेर लग जाते हैं।"

यह सुनते ही गुदड़ीलाल को फिङफिङ के साथ अपना झगड़ा याद आ गया। उसका मन खराब हो गया। अब वह बातचीत का विषय बदलना चाहता था।

"तुम इसके अलावा और क्या-क्या करते हो?" उसने पूछा।

"कुँए से पानी निकालने के लिए भी पम्प चलाता हूँ," जनरेटर ने जवाब दिया।

"कुँए से पानी निकालने के लिए पम्प की क्या जरूरत है?" गुदड़ीलाल ने आश्चर्य से पूछा।

"अगर ज़्यादा दिनों तक पानी न पड़े, तो खेतों में

पानी की कमी हो जाती है और फसल सूख जाती है। अगर पम्प द्वारा कुँए से पानी खींचकर खेतों में पहुँचा दिया जाए, तो फसल अच्छी होती है और ढेर सारा अनाज पैदा होता है।"

फिर एक बार अनाज का नाम सुनकर गुदड़ीलाल बेचैन हो उठा।

"क्या पम्प चलाने के अलावा तुम कोई और काम भी कर सकते हो?" उसने पूछा।

"क्यों नहीं?" छोटे जनरेटर ने खुश होकर कहा। "मैं तरह-तरह के काम कर सकता हूँ। मैं गहाई-मशीन भी चला सकता हूँ...।"

"यह मशीन किस काम आती है?"

"यह मशीन धान को भूसी से अलग करने के काम आती है, ताकि वह खाने योग्य बन सके। मैं चक्की भी चला सकता हूँ...।"

"चक्की किस काम आती है?"

"इससे आटा पीसा जाता है। चावल और गेहूँ दोनों ही अच्छे अनाज हैं...।"

हे भगवान, फिर अनाज का नाम आ गया! यह नाम सुनते-सुनते उसके कान पक चुके थे। गुदड़ीलाल ने दोनों हाथों से अपने कान बन्द कर लिए।

"तुम्हें क्या हो गया है?" जनरेटर ने आश्चर्य से पूछा।

गुदड़ीलाल ने उसकी बात नहीं सुनी।

"तुम्हें क्या हो गया है?" जनरेटर ने फिर एक बार जोर से चिल्लाकर पूछा।

इस बार गुदड़ीलाल को उसका सवाल सुनाई पड़ा। "ओह!...मेरे कान बरफ जैसे ठण्डे हो गए हैं!" उसने जवाब दिया।

9. असली रेलगाड़ी की यात्रा

इसमें शक नहीं कि गुदड़ीलाल का चेहरा और कान बरफ जैसे ठण्डे हो गए थे। रिक्शाठेला जितनी तेज़ रफ्तार से चलता जा रहा था, गुदड़ीलाल को उतनी ही तेज़ हवा भी लग रही थी। फिर उसका कोट भी गुम हो चुका था। इसलिए उसके हाथ-पैर बरफ की तरह ठण्डे होते जा रहे थे।

जनरेटर ने देखा, गुदड़ीलाल ठण्ड से ठिठुर रहा है। उसने चिन्तित होकर पूछा : "तुम्हें ठण्ड तो नहीं लग रही?"

"हाँ, लग रही है।"

"तो आओ, मेरे कोट के नीचे आ जाओ। हालाँकि यह लोहे का है। फिर भी खुले में रहने से तो उसके नीचे आना ज़्यादा अच्छा है।"

पहले गुदड़ीलाल राजी नहीं हुआ। वह सोच रहा था, एक बहादुर बच्चे को ठण्ड से नहीं डरना चाहिए। पर जब ठण्ड बहुत बढ़ गई और उसके लिए बाहर बैठना असम्भव हो गया, तो उसने जनरेटर की बात मान ली। मशीन के पाए पर चढ़कर वह उसके बाहरी खोल के अन्दर घुस गया और आराम से बैठ गया। अब उसे हवा का सामना नहीं करना पड़ रहा था, बल्कि कुछ गरमी महसूस हो रही थी। उसने जनरेटर से बात करना बन्द कर दिया। थोड़ी देर में उसे नींद आ गई।

कानों को बहरा करने वाली आवाज़ से अचानक उसकी नींद खुल गई। वह कितनी देर सोया, इसका उसे पता नहीं चल पाया। उसे एक अजीब-सी आवाज़ सुनाई दी : "छुक-छुक छुक-छुक।" क्या ली चाचा अब भी रिक्शाठेला चला रहे हैं? आखिर यह आवाज़ कहाँ से आ रही है? गुदड़ीलाल घिसटता हुआ जनरेटर के खोल से बाहर निकल आया। यह क्या हुआ? अब उसे न तो सड़क की बिजलियाँ दिखाई दे रही थीं और न आसमान के तारे; न तो अपने आगे के ट्रक दिखाई दे रहे थे और न पीछे के रिक्शाठेले। चारों तरफ़ घुप अँधेरा था।

"तुम्हारी नींद बड़ी अच्छी है," अँधेरे में जनरेटर की आवाज़ आई।

"गहरी नींद स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।"

हालाँकि गुदड़ीलाल का उससे बात करने का मन नहीं हुआ, फिर भी उसने पूछा : "ली चाचा कहाँ हैं?"

"कौन से ली चाचा?"

"जो रिक्शाठेला चला रहे थे।"

"रिक्शाठेला तो लौटकर कारखाने जा चुका है।"

"क्या कहा?" गुदड़ीलाल बहुत परेशान हो गया। "मुझे तो ली चाचा के साथ लौटना था। मुझे कल सुबह तओतओ से मिलना है। अब क्या करूँ?"

"अरे!" जनरेटर सहानुभूति के स्वर में बोला, "तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया? वरना जब हमें रेलगाड़ी में रखा जा रहा था, उस समय मैं तुम्हें जगा देता।"

"रेलगाड़ी में? कौन सी रेलगाड़ी में?" गुदड़ीलाल ने घबराकर पूछा।

"इसी रेलगाड़ी में। क्या तुम नहीं जानते कि इस समय हम रेलगाड़ी में बैठे हुए हैं?"

"लगता है, तुम मजाक कर रहे हो। रेलगाड़ी भला ऐसी कहाँ होती है ?"

"वह कैसी होती है?"

"रेलगाड़ी?... हाँ, याद आया। रेलगाड़ी ऐसी होती है जैसे फिङफिङ के पास है।"

"हो सकता है, तुम्हारी बात भी ठीक हो," जनरेटर ने कहा। "रेलगाड़ियाँ शायद कई प्रकार की होती हैं।"

"पर यह तो बताओ कि हम जा कहाँ रहे हैं?" गुदड़ीलाल ने उत्सुकता से पूछा। "क्या हम ऊहान तो नहीं जा रहे?"

"नहीं, हम ऊहान नहीं जा रहे। हम एक पहाड़ी इलाके में जा रहे हैं। मैं छह महीने वहाँ रह चुका हूँ। वहाँ काम करते-करते मेरे अन्दर कुछ खराबी आ गई थी। इसलिए मरम्मत के लिए मुझे कारखाने भेज दिया गया। अब मैं ठीक हो गया हूँ। इसलिए फिर वहाँ लौट रहा हूँ। यह पहाड़ी इलाका बहुत सुन्दर है।..."

गुदड़ीलाल को पहाड़ी इलाके के बारे में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

"तुम मरम्मत के लिए कारखाने फिर कब जाओगे?" उसने पूछा।

"जब वहाँ जाओ, तो ली चाचा से जरूर मिलना। उनसे कहना, मुझे लेने यहाँ आ जाएँ, मुझे तओतओ के पास ले जाएँ।"

"मैं शायद वहाँ फिर कभी नहीं जाऊँगा," जनरेटर ने क्षमा माँगते हुए कहा।

"क्यों नहीं जाओगे?" गुदड़ीलाल ने पूछा।

"कारखाने के मैकेनिक ने कहा है कि अब से वह हर हफ़्ते खुद आकर मेरी जाँच कर जाया करेगा और अगर कोई खराबी होगी, तो उसी समय ठीक कर देगा। इस तरह मुझे लाने-ले जाने से लगने वाला बहुत-सा समय बच जाएगा।"

गुदड़ीलाल काफ़ी देर गुमसुम बैठा रहा। फिर उसने एक आह भरते हुए कहा : "इसका मतलब यह हुआ कि अब मैं शिशुशाला में नहीं लौट सकूँगा!"

रेलगाड़ी को गुदड़ीलाल के दुख से कोई सरोकार नहीं था। वह तेज़ी से आगे बढ़ती जा रही थी।

कहानी
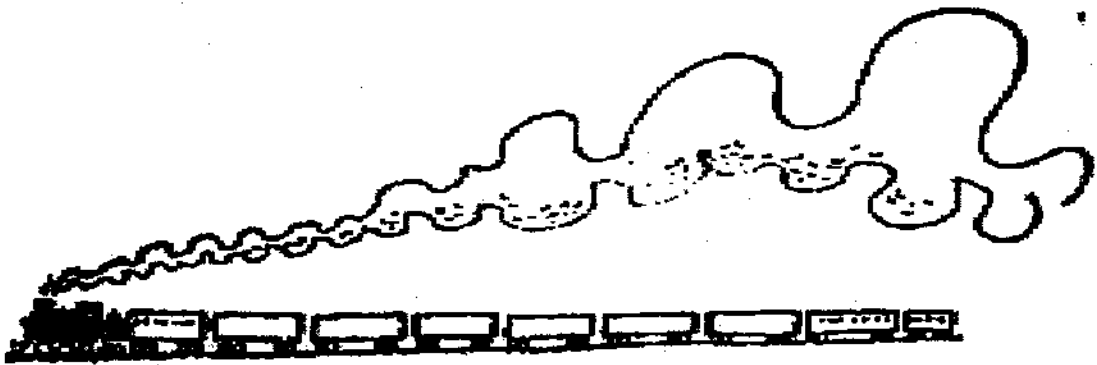
हम सूरज को देख सकते हैं

मिकोला गिल

वह एक सिपाही था।

वह 1941 में सिपाही बना, जब हिटलर की नाज़ी फ़ौज ने उसके देश पर हमला कर दिया।

वह कोई साधारण सिपाही नहीं था। वह एक इंजीनियर था। फ़ौज ने इंजीनियर का काम ख़तरनाक और कठिन होता है। उसे हमेशा आगे रहना पड़ता है। जब टैंक आगे बढ़ते हैं तो उससे पहले इंजीनियर को जाकर बारूदी सुरंगें हटानी पड़ती हैं।

इंजीनियर को बहादुर होना चाहिए। उसका कलेजा बहुत मज़बूत और हाथ बहुत सधे होने चाहिए। अगर हाथ काँपे तो बारूदी सुरंग उसके हाथों में ही फट जाएगी।

हमारा सिपाही बहादुर था। उसका कलेजा मज़बूत था और हाथ सधे हुए थे। उसने कभी गलतियाँ नहीं कीं। उसने सैकड़ों, या शायद हज़ारों सुरंगें हटाईं और जीत का रास्ता साफ़ किया। ये बहुत लम्बा रास्ता था। चार साल बाद 1945 में लड़ाई ख़त्म हुई।

सिपाही ने सोचा कि अब फ़ौज में उसका काम ख़त्म हो गया। वह घर आया। उसे उम्मीद थी कि अब वह हल चलायेगा और फसल उगायेगा। लेकिन तभी एक हादसा हो गया। दुश्मन की फ़ौज खेतों में बारूदी सुरंगें छोड़ गयी थी। एक दिन खेत में काम करते हुए उसका किशोर उम्र का बेटा सुरंग फटने से मारा गया। सिपाही ने युद्ध में कई बार मौत देखी थी लेकिन जब उसके बेटे की मौत हुई तो दुख से उसके बाल सफ़ेद हो गये।

एक बार उसने सुना कि अस्पताल में एक अलग वार्ड है जहाँ बारूदी सुरंगों से घायल हुए बच्चे भरती हैं। वह उनसे मिलने गया। उन्हें देखकर उसका दिल रो उठा जैसे अपने बेटे की मौत के समय हुआ था। एक बच्चा उसे हमेशा याद रह गया। उसकी आँखों की जगह सिर्फ़ गड्ढे रह गये थे। उस बच्चे के शब्द उसके कानों में गूँजते रहे : "मैं सूरज को नहीं देख सकता..."

इसलिए सिपाही ने एक बार फिर फ़ौजी वर्दी पहन ली। नाज़ी फ़ौज जो सुरंगें, बिना फटे हुए गोले और बम छोड़ गयी थी, वह उन्हें साफ़ करने में लग गया। जब भी वह किसी सुरंग को नाकाम करता था तो गुस्से और घृणा के साथ उसे उठाकर किनारे फेंकता था जैसे वह कोई जहरीला साँप हो। वह बुदबुदाता था : "अब तुम किसी की आँखों से सूरज को छीन नहीं सकते।"

सिपाही कई साल तक अपना ख़तरनाक काम करता रहा ताकि लोग बिना डरे हर जगह चल-फिर सकें और बच्चों का जहाँ जी चाहे वे खेल सकें।
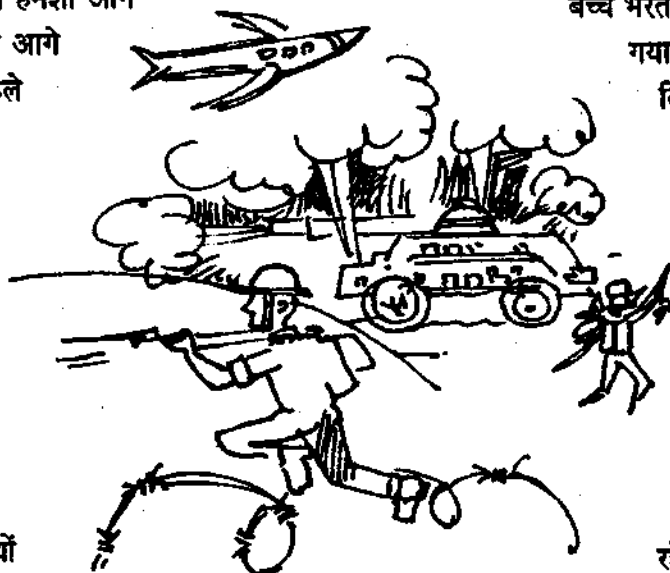
दूसरे देशों में भी लड़ाइयाँ जारी थीं। अफ्रीका के कई देशों में जनता अपनी आज़ादी के लिए लड़ रही थी। वहाँ भी जनता के दुश्मनों ने बारूदी सुरंगें, बम और गोलों से धरती को पाट दिया था। वहाँ भी अस्पतालों में घायल बच्चों से भरे हुए वार्ड थे।

आज़ादी के बाद एक देश की सरकार के अनुरोध पर सोवियत संघ के उस सिपाही को बारूदी सुरंगें हटाने के लिए वहाँ भेजा गया।

उसने फिर कोई ग़लती नहीं की। उसके हाथ कभी नहीं काँपे। उसने हज़ारों सुरंगों और बमों को नाकाम किया। उस सुदूर अफ्रीकी देश में भी जहरीले साँप के दाँत तोड़कर फेंकते हुए वह कहता था : "अब तुम कभी किसी की आँखों से सूरज को नहीं छीन पाओगे।"

उसे एक छोटा-सा गाँव ज़िन्दगी भर याद रहा। सारे गाँव वालों ने सिपाही का स्वागत किया। वह जानते थे कि मज़दूरों के राज से आया यह सिपाही सच्चे दिल से उनकी मदद करेगा। उसे एक छोटी बच्ची याद थी जिसने उसे जंगली फूलों का गुलदस्ता भेंट किया था। बच्ची का रंग बिल्कुल साँवला था और उसकी मुस्कान ने उसका गोल चेहरा चमक उठता था। सिपाही को उस गाँव में एक ऐसे खेत से सुरंगें हटानी थीं जिसमें ऊँची घास उगी हुई थी। किसानों ने खेत में हल चलाने की कोशिश की लेकिन उनमें से कई तो लौटकर ही नहीं आये।

सिपाही ने खेत लगभग साफ़ कर दिया था। बस एक छोटा-सा हिस्सा बचा रह गया था। लेकिन सिपाही थका हुआ था।

उस शाम एक धमाके से गाँव दहल गया। किसान समझ गये कि क्या हुआ था। वे सिपाही को गाँव में ले आये। वह ज़िन्दा था लेकिन उसकी आँखों से सूरज हमेशा के लिए छिन गया था। वह अफ्रीका की गर्म धूप को महसूस कर सकता था लेकिन उसे देख नहीं सकता था।

हज़ारों लोग उसे विदाई देने आये। साँवली लड़की ने उसे फिर फूलों का गुलदस्ता दिया और हालाँकि वह उसे देख नहीं सकता था, पर वह उसे पहचान गया। उसके मज़बूत हाथ ने बच्ची के रूखे बालों को प्यार से सहलाया। शायद पहली बार उसका हाथ काँप गया।

घर पहुँचने पर उसे पता चला कि वह नाना बन गया है। उसकी बेटी ने एक प्यारी-सी बच्ची को जन्म दिया था। वह बहुत गोरी थी और उसकी आँखें नीली थीं। लेकिन सिपाही के घर वालों को यह देखकर हैरानी होती थी कि वह हमेशा बच्ची को "साँवली" कहकर बुलाता था। शायद इसलिए कि उसने जिस बच्ची को आखिरी बार देखा था वह खिली हुई मुस्कान वाली साँवली लड़की ही थी।

हम सब सूरज को देख सकते हैं। तुम उसे देख सकते हो, मैं भी देख सकता हूँ। लेकिन सफ़ेद बालों वाला एक लम्बा आदमी छड़ी टेकते हुए सड़क पर जा रहा है। सूरज उसके चेहरे पर चमकता है लेकिन वह सूरज को देख नहीं सकता। हमें प्यार और सम्मान से उसे सलाम करना चाहिए।

अनुवाद : कविता

एस्तोनिया की लोककथा

मच्छर और घोड़ा

एक दिन एक घोड़ा मैदान में घास चर रहा था। एक मच्छर उड़ता-उड़ता उसके पास पहुँच गया।

"भिन-भिन-भिन...ओय घोड़े, मैं तुम्हें दिखाई नहीं दे रहा क्या?" मच्छर बोला। क्योंकि ऐसा लगा कि घोड़े ने उसकी ओर ध्यान ही नहीं दिया।

"हाँ, अब मुझे दिख रहे हो," घोड़े ने जवाब दिया।

मच्छर ने घोड़े को एक सिरे से दूसरे सिरे तक देखा। उसने उड़-उड़कर उसकी पूँछ, उसकी पीठ, उसकी टाँगें, उसकी गर्दन और उसके कानों को एक-एक करके देखा। उसने देखा और सिर हिलाया।

"तुम तो बहुत बड़े हो, दोस्त!" उसने कहा।

"हाँ, शायद तुम मुझे छोटा तो नहीं ही कह सकते," घोड़े ने हामी भरी।

"मैं तो तुमसे काफ़ी छोटा हूँ!"

"हाँ, छोटे तो हो!"

"और तुम खासे ताक़तवर भी होगे?"

"काफ़ी ताक़तवर।"

"मेरे ख़्याल से कोई मक्खी तुमसे नहीं जीत पायेगी," मच्छर ने पूछा।

"बिल्कुल नहीं!"

"घुड़मक्खी भी नहीं?"

"नहीं, घड़मक्खी भी नहीं जीत सकती।"

"बड़ी मक्खी भी नहीं?"

"नहीं, बड़ी मक्खी भी नहीं।"

मच्छर खुश हो गया।

उसने सोचा "घोड़ा ताक़तवर है लेकिन मैं तो उससे भी ताक़तवर हूँ।" उसने गर्व से सीना फुलाते हुए कहा : "ओए घोड़े, तुम बड़े और ताक़तवर होगे, लेकिन हम मच्छर और भी ताक़तवर हैं। हम तुमको ऐसे डंक मारेंगे कि तुम टें बोल जाओगे। हम चुटकी बजाते तुमको हरा देंगे!"

"नहीं, तुम नहीं जीत पाओगे!" घोड़े ने कहा।

"हाँ, हम जीतेंगे!"

"नहीं!"

"हाँ!"

वे एक घण्टे तक बहस करते रहे। फिर एक और

घण्टे तक बहस में उलझे रहे। कोई दूसरे की बात मानने को तैयार नहीं था।

आखिरकार घोड़े ने कहा, "बहस करने से कोई फ़ायदा नहीं। चलो हम दो-दो हाथ करके देख लें कि कौन जीतता है!"

मच्छर ने ताल ठोंकते हुए कहा, "चलो, आ जाओ मैदान में। अभी हम तुम्हें मज़ा चखाते हैं!"

वह घोड़े की पीठ पर से उठा और अपनी पतली-तीखी आवाज़ में अपने साथियों को आवाज़ लगायी : "जल्दी यहाँ आ जाओ सबके सब!"

सैकड़ों मच्छरों के झुण्ड भिन-भिन करते हुए वहाँ पहुँच गये। एक झुण्ड झाड़ियों से उठा, एक झुण्ड बर्च के पेड़ से उड़कर आया, दलदल से, पोखर के सड़ते हुए पानी से, नदी के ऊपर से—हर जगह से उड़कर मच्छरों के झुण्ड सीधे घोड़े के पास आये, चारों तरफ़ से उसे घेर लिया और उसके शरीर से चिपक गये।

घोड़े ने कहा, "अच्छा, तो तुम सब पहुँच गये?"

"हाँ!" पहला मच्छर अकड़कर चिल्लाया। वह कोई मामूली मच्छर नहीं था, मच्छरों का गुण्डा था।

"और सबको बैठने की जगह मिल गयी?"

"हाँ!"

"ठीक है, फिर कसकर पकड़ लो!" घोड़े ने कहा।

वह पीठ के बल लेट गया, खुर हवा में उठा लिये और इधर-उधर लोट लगाने लगा। जरा-सी देर में उसने सारे मच्छरों को मसलकर रख दिया। विशाल मच्छर सेना का सिर्फ़ एक छुटकू सिपाही बचा रह गया, हालाँकि उसके पंख भी खुरच गये थे। उसके अलावा बस वह गुण्डा मच्छर बच गया क्योंकि ख़तरा होते ही वह फुर्र हो गया था। गुण्डे हमेशा ऐसा ही करते हैं। वे लड़ाई शुरू करते हैं लेकिन दूसरे लोगों को लड़ता छोड़कर खुद फूट लेते हैं।

छुटकू सिपाही उड़कर गुण्डा मच्छर के पास गया और उसको सलाम ठोंका, जैसे वह कोई जनरल हो।

"घोड़ा मर चुका है, हमने उसे ख़त्म कर दिया!" वह बोला। "अगर हमारे पास दो-चार लोग और होते, तो हम उसकी खाल उतार लाते।"

"शाबास!" गुण्डा मच्छर ने कहा। वह जंगल की ओर उड़ गया ताकि कीड़ों और चींटों को भी इस घटना की जानकारी दे दी जाये। ये कोई मज़ाक थोड़े ही था! मच्छरों ने एक घोड़े को मिट्टी में मिला दिया था—इसका मतलब था कि अब वे धरती के सबसे ताक़तवर प्राणी थे।

अनुवाद : सत्तू प्रसाद
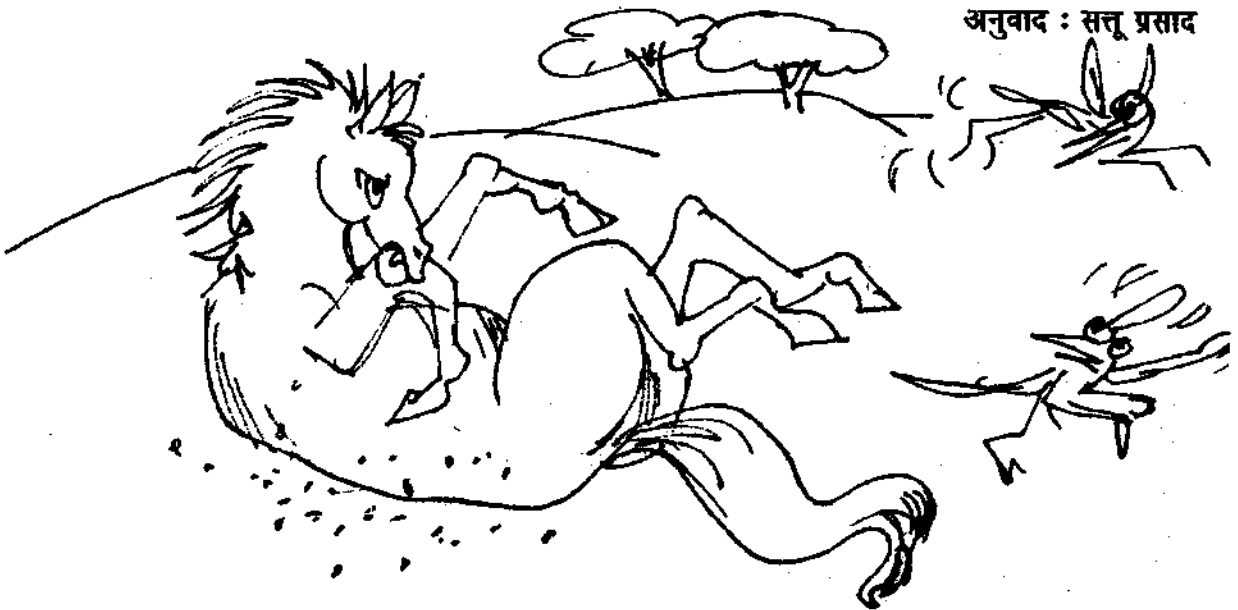
जैसे को तैसा

सेर्गेई मिखाल्कोव

खरगोश और उसकी पत्नी ने जंगल में अपने लिए एक छोटा-सा घर बनाया। उन्होंने झाड़ू बुहारू करके मैदान को साफ़ किया। अब उनके लिए एक बड़ा काम बचा था—रास्ते में पड़े हुए बड़े चट्टान को हटाना।

"चलो हम मिलकर धक्का देते हैं और उसे रास्ते से हटा देते हैं," खरगोश की पत्नी ने कहा।

"क्यों परेशान होती हो?" खरगोश ने कहा, "उसे वहीं पड़े रहने दो, अगर किसी को जाना होगा तो वह उसके किनारे से जा सकता है।"

और इस तरह चट्टान उनके बिल्कुल सामने कुछ दूरी पर पड़ा रहा।

एक दिन खरगोश बगीचे से उछलते-कूदते हुए घर आ रहा था और भूल गया कि रास्ते में एक चट्टान पड़ा हुआ है। वह बुरी तरह लड़खड़ाकर गिर गया और उसकी नाक टूट गई।

"चलो, पत्थर को हटा दें," उसकी पत्नी ने फिर कहा। "देखो, तुमने खुद को कितना चोटिल कर लिया।"

"तो क्या!" खरगोश ने कहा। "कोई ज़्यादा चोट नहीं लगी है।"

थोड़ी देर बाद खरगोश की पत्नी एक बर्तन में गर्म सूप लेकर आई और उसे बाहर टेबल पर रख दिया। वह खरगोश को देखने लगी, जो अधैर्य से अपनी चम्मच टेबल पर खड़खड़ा रहा था : और सामने पड़े चट्टान के बारे में भूल कर उससे टकरा गई जिससे सूप बिखर गया और वह जल गयी। पत्थर उनके लिए एक ऐसी मुसीबत बन गया, जिसका कोई अन्त नहीं था।

"चलो इस पुराने पत्थर को हटा दें खरगोश!" पत्नी ने विनती की। "अनजाने में किसी का भी सिर इससे टूट सकता है।"

"उसे वहीं पड़े रहने दो, जहाँ वह है!" अड़ियल खरगोश ने जवाब दिया।

एक दिन खरगोश और उसकी पत्नी ने अपने पुराने दोस्त मीशा को डिनर (रात के भोजन) पर बुलाया।

"हाँ, मुझे खुशी होगी," भालू ने कहा, जब उसे आमंत्रित किया गया। "तुम केक बना लेना और मैं थोड़ी शहद लेता आऊँगा।"

जब खरगोश दम्पत्ति ने अपने मेहमान को आते देखा तो वे उससे मिलने पोर्च पर चले गए। मीशा शहद के पीपे को अपने सीने और दोनों पंजों से चिपटाये हुए जल्दी-जल्दी चला आ रहा था। वह सामने देखते हुए नहीं चल रहा था।

खरगोश दम्पत्ति ने हाथ हिलाते हुए चिल्लाया, "पत्थर! उधर देखो पत्थर!"

भालू समझ नहीं पा रहा था कि वे क्या इशारा कर रहे हैं और क्या चिल्ला रहे हैं। इसके पहले कि वह समझ पाता पत्थर से टकरा गया और बुरी तरह कलाबाजी खाते हुए धड़ाम से खरगोश के घर के सामने गिर पड़ा।

पीपा टूट गया और उसके इर्द-गिर्द घर भी धड़धड़ाते हुए गिर पड़ा।

यह सब देखकर भालू दहाड़ उठा। दोनों खरगोश रो रहे थे।

लेकिन अब रोने का क्या मतलब था? यह उनकी ही गलती थी!

अनुवाद : नमिता

विज्ञान
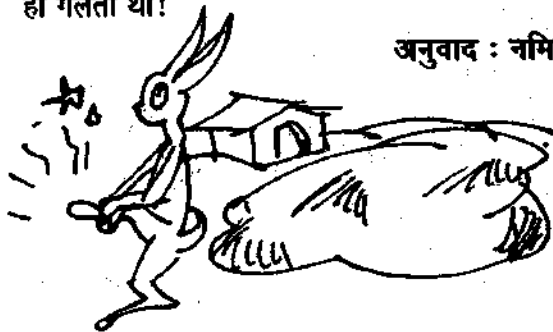
हवा की शक्ति

बच्चो, कागज की फिरकी लेकर दौड़ने पर जब वो तेज़-तेज़ घूमती है तो बहुत मजा आता है न? क्या तुम जानते हो कि यह हवा की शक्ति से घूमती है?

हवा की शक्ति से हालैण्ड में पानी ऊपर खींचा जाता है। हालैण्ड का तल समुद्र के तल से नीचा है। इसलिए वहाँ प्रायः पानी भरा रहता है। पानी निकालकर उसे समुद्र तक पहुँचाने की समस्या सदैव बनी रहती है। पर हालैण्ड में, जिसे नीचा होने के कारण पाताल देश भी कहते हैं, समुद्र की ओर से लगातार हवा चलती रहती है। इसलिए ये 'पवन-चक्कियाँ' बिना कुछ खर्च किए ही चलती रहती हैं और पानी निकालती रहती हैं।
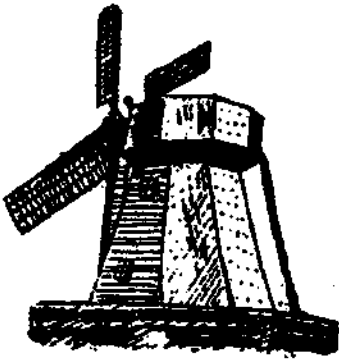
कई देशों में जहाँ इसी तरह हवाएँ लगातार चलती रहती हैं पवन-चक्कियों से आटा पीसा जाता है। इस प्रकार हवा की शक्ति से और भी कई काम लिए जा सकते हैं। लकड़ी की चिराई तक की जा सकती है। कुँओं से पानी खींचने का काम तो कहीं-कहीं हमारे देश में भी होता है।

पवन-चक्की चलाने के लिए एक विशेष प्रकार का पहिया बनाया जाता है, जिसमें फन लगे होते हैं। हवा की शक्ति से फन घूमते हैं। उनके साथ सारा पहिया घूमता है और पहिये के साथ जो चीज़ लगी हो उसमें गति उत्पन्न हो जाती है। जहाँ पानी खींचना हो वहाँ उसके साथ एक पम्प लगा देते हैं। आटा पीसना हो तो पाट जोड़ देते हैं जो घूमता रहता है।

कई पवन-चक्कियों में पहिये के स्थान पर पाल लगाए जाते हैं। ये एक तरह की मोटे कपड़े की चादरें होती हैं जिनमें हवा भर जाती है। पाल द्वारा नाव भी चल सकती है। किसी समय जहाज इसी प्रकार चलते थे। नाविकों का काम केवल पालों के रुख बदलना होता था। कोलम्बस जब भारत का पश्चिमी मार्ग खोजने निकला और उसने एक नया महाद्वीप खोज निकाला तो वह इसी प्रकार के जहाज लेकर गया था। इस प्रकार के जहाज में वास्को-डि-गामा भारत आया था।

हवा की शक्ति का लाभ उठाने के लिए हमें यह मालूम होना चाहिए कि हवा किधर से आ रही है। हमें उसकी गति का भी बोध होना चाहिए। यह बोध हमारी और भी कई प्रकार से सहायता करता है। धूल उड़ाकर हम जाँच सकते हैं कि हवा किधर से आ रही है। भूसा और अनाज अलग करने से पहले किसान ऐसा ही करता है। आप धुएँ को देखकर या झण्डे को देखकर हवा की दिशा मालूम कर सकते हैं। किन्तु इस काम के लिए एक विशेष यंत्र होता है जैसा यहाँ चित्र में दिखाया गया है। यह यंत्र आप स्वयं भी बना सकते हैं। इसे बाद-मुर्ग कहते हैं। बाद फारसी भाषा का शब्द है। उसका अर्थ है हवा और मुर्ग है वह साधारण पक्षी जो सुबह-सवेरे बाँग देता है।
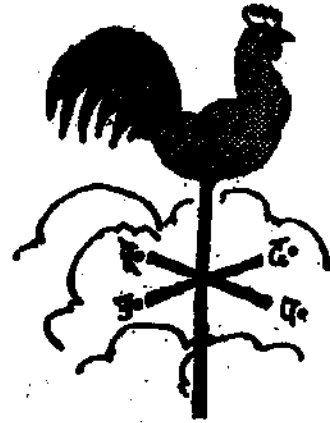
हवा की गति नापने का एक अलग यंत्र होता है। जिसे एनिमोमीटर कहते हैं।

प्रायः देखा गया है कि सुहावने हल्के समीर की गति पाँच-छह मील प्रति घण्टा होती है। हवा मुँह के पास से गुजरती महसूस हो तो समझो वह दस-बारह मील प्रति घण्टा चल रही है। साधारण झक्कड़ में हवा की गति चालीस-पचास मील प्रति घण्टा होती है। तेज़ तूफानों में यह गति सौ मील प्रति घण्टा तक पहुँच जाती है।

केशव सागर

रात को सोऊँगा कहाँ?

एक समय की बात है। चीन में लू चीं नाम का एक आदमी रहता था। वह किताबों का कीड़ा था। बस, पूरा दिन पढ़ता ही रहता। पढ़ने का उसे इतना शौक था कि खाना तक भूल जाता। चलते-फिरते, उठते-बैठते, खाते-पीते बगल में पुस्तक दबाए रखता।

एक बार उसकी पत्नी खाना पका रही थी, तो अचानक चूल्हे की लकड़ियाँ खत्म हो गईं। उसने पति से लकड़ियाँ ले आने को कहा। लू चीं तुरन्त उठा और पुस्तक बगल में दबाए, चल पड़ा लकड़ियाँ लाने। जल्दी में वह पैसे लेना भी भूल गया। एक चौराहे पर आकर वह यह सोचकर बैठ गया कि कोई लकड़हारा वहीं से गुजरेगा तो वह उससे लकड़ियाँ खरीद लेगा। तब तक वह पुस्तक खोलकर पढ़ने लगा। कुछ समय के बाद एक लकड़हारा वहीं से गुजरा तो लू चीं ने उससे पूछा, "भाई, मुझे लकड़ियाँ चाहिए। दोगे?" लकड़हारा उत्तर दे उससे पहले ही वह फिर पुस्तक पढ़ने में खो गया। लकड़हारा कुछ देर तक वहाँ रुका और चल दिया। अचानक लू चीं को लकड़हारे का ख्याल आया परन्तु वह तो जा चुका था। लू चीं फिर पढ़ने में खो गया। कुछ देर के बाद दूसरा लकड़हारा वहाँ से गुजरा तो उसे पता ही न चला। बहुत देर के बाद तीसरा लकड़हारा आया तो उसने उससे पूछा, "भाई, क्या तुम लकड़ियाँ बेचोगे?"

लकड़हारे ने उत्तर दिया, "बेचने के लिए ही तो लाया हूँ। कितनी चाहिए?"

"कितनी चाहिए!" लू चीं ने अपनी जेबें टटोली और चिल्लाया "अरे! पैसे लेना तो भूल गया हूँ। ज़रा यहाँ रुको तो घर से पैसे ले आऊँ।"

और वह घर की ओर भागा। लकड़हारे को तो बाज़ार जाना था। अतः रुका नहीं।

उधर लू चीं की पत्नी बड़ी बेसब्री से पति की प्रतीक्षा कर रही थी। पति को खाली हाथ लौटते देखा तो चिल्लाई, "लकड़ियाँ कहाँ हैं?"

"कहाँ से लाता? पैसे तो तुमने दिये ही नहीं!"

"मैंने नहीं दिये या तुमने नहीं लिये?"
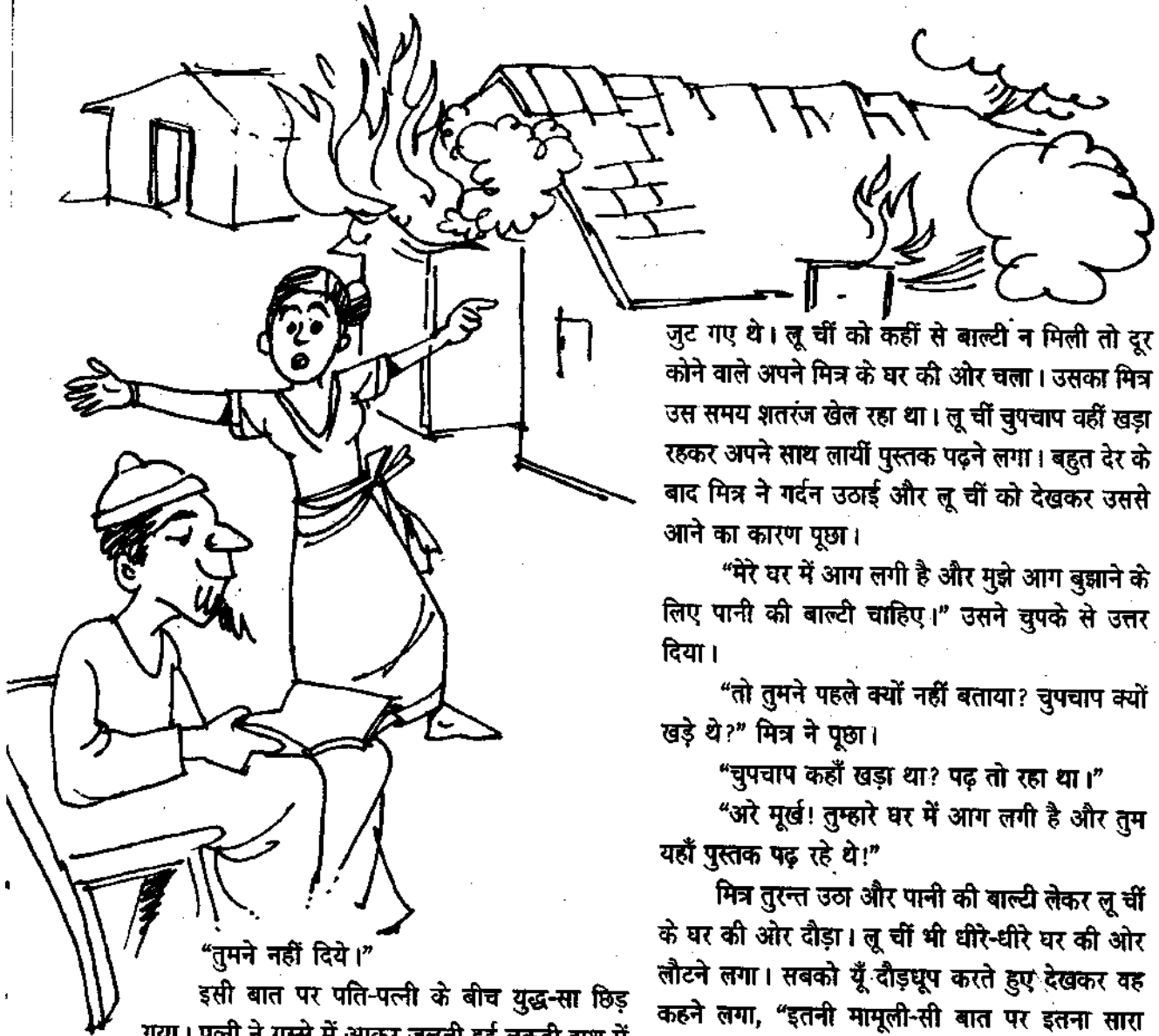
"तुमने नहीं दिये।"

इसी बात पर पति-पत्नी के बीच युद्ध-सा छिड़ गया। पत्नी ने गुस्से में आकर जलती हुई लकड़ी हाथ में उठाई तो उससे घर में आग लग गई। पत्नी मदद के लिए चिल्लाने लगी परन्तु लू चीं महाशय तो फिर पुस्तक लेकर पढ़ने बैठ गए।

"यह क्या करते हो! यहाँ घर में आग लगी है और तुम पुस्तक पढ़ने बैठ गए हो! जल्दी जाओ और कहीं से पानी की बाल्टी ले आओ।" पत्नी ने डाँट सुनाई।

लू चीं को पुस्तक छोड़ने की इच्छा नहीं हो रही थी फिर भी वह उठा और कहीं से बाल्टी ले आने के लिए चल पड़ा। इस बीच पास-पड़ोस के लोग आग बुझाने में जुट गए थे। लू चीं को कहीं से बाल्टी न मिली तो दूर कोने वाले अपने मित्र के घर की ओर चला। उसका मित्र उस समय शतरंज खेल रहा था। लू चीं चुपचाप वहीं खड़ा रहकर अपने साथ लायीं पुस्तक पढ़ने लगा। बहुत देर के बाद मित्र ने गर्दन उठाई और लू चीं को देखकर उससे आने का कारण पूछा।

"मेरे घर में आग लगी है और मुझे आग बुझाने के लिए पानी की बाल्टी चाहिए।" उसने चुपके से उत्तर दिया।

"तो तुमने पहले क्यों नहीं बताया? चुपचाप क्यों खड़े थे?" मित्र ने पूछा।

"चुपचाप कहाँ खड़ा था? पढ़ तो रहा था।"

"अरे मूर्ख! तुम्हारे घर में आग लगी है और तुम यहाँ पुस्तक पढ़ रहे थे!"

मित्र तुरन्त उठा और पानी की बाल्टी लेकर लू चीं के घर की ओर दौड़ा। लू चीं भी धीरे-धीरे घर की ओर लौटने लगा। सबको यूँ दौड़धूप करते हुए देखकर वह कहने लगा, "इतनी मामूली-सी बात पर इतना सारा शोर!"

लू चीं की बात सुनकर लोगों ने उत्तर दिया, "अरे अक्कल के दुश्मन! यह मामूली बात नहीं है। केवल पोथी पढ़ने से कुछ नहीं होनेवाला। अब बताओ। रात को सोओगे कहाँ?"

"सोऊँगा कहाँ? सचमुच यह तो बड़ी समस्या है!" तब उसे पता चला कि पूरा दिन पुस्तकों में खोए रहने से ज़्यादा महत्व तो इन चीज़ों का है।

हूंदराज बालवाणी

कहानी : पर्यावरण दिवस 5 जून पर विशेष

तितली रानी आना

स्कूल की छुट्टी हुई। जिन बच्चों के घर पास में थे, वे तेज़ी से दौड़ गए। जिन बच्चों को लेनेवाले आ चुके थे, वे भी तुरन्त चले गए। दूर जानेवाले जो बच्चे बचे, वे गेट के पास खड़े होकर इंतजार करने लगे।

आज गेट के पास एक नया ठेलेवाला खड़ा था। ठेले पर गमले रखे थे। कुछ पौधों में फूल भी खिले हुए थे।

बच्चे ठेले के पास गए और फूल-पौधे देखने लगे। ठेलेवाला उन्हें फूल-पौधों के बारे में बताने लगा।

एक बच्चे के घर में कोई पौधा नहीं था। उसने ठेलेवाले से पूछा—"लाल फूल किसमें आता है?"

ठेलेवाले ने एक पौधे की ओर इशारा कर दिया।

"इसका नाम क्या है?" बच्चे ने पूछा।

"गुड़हल!" ठेलेवाले ने बताया—"इसमें खूब बड़ा लाल रंग का फूल खिलता है।"

बच्चे ने फिर पूछा—"कितने दिन में खिलेगा?"

"पन्द्रह-बीस दिन में।" उसने बताया।

"यह पौधा कितने का है?" बच्चे के मन में उसे घर ले जाने की इच्छा जागी।

ठेलेवाले ने बीस रुपये बताए। तब तक बच्चे को लेने उसकी दीदी आ गई।

घर आकर उसने माँ से पैसे माँगे। माँ ने डाँट दिया—"गमलों से गन्दगी होती है।"

अगले दिन बच्चे ने आइसक्रीम नहीं खाई। उसने ठेलेवाले से पूछा—"क्या आप यहाँ रोज़ आएँगे?"

उसके हाँ कहने पर बच्चे ने उसे एक रुपया दिया और कहा—"मैं रोज़ एक रुपया दूँगा। यह पौधा किसी और को मत देना।"

दूसरे दिन बच्चे ने टॉफियाँ नहीं खाईं। तीसरे दिन बच्चे ने ककड़ी नहीं खाई। चौथे दिन...

बच्चा सपना देखने लगा। जब फूल खिलेगा, तो मधुमक्खी आएगी। गुनगुन करके गाने-जैसा कुछ सुनाएगी, पर उसे दूर से देखना होगा। प्रेइंग मेंटिस आएगा, जो उससे नमस्ते करेगा और मटक-मटककर नाच दिखाएगा। तितली भी आएगी। उससे बातें करेगी। वह उसके पंखों में कुछ और रंग भर देगा।

बीस दिन में उसने सत्रह रुपये जमा कर दिए। पौधे में कली आ चुकी थी। बड़ी भी हो गई थी। ठेलेवाले ने बताया—"कल इसमें फूल खिल जाएगा।"

बच्चा उदास हो गया। वह चाहता था कि फूल उसके घर पर ही खिले। दीदी आ गई। वह चल दिया। उसने बुझे हुए मन से मुड़कर पौधे की ओर देखा। फिर चल दिया।

ठेलेवाले को भी बहुत बुरा लगा। अचानक उसकी आँखें चमक उठीं। वह गमला लेकर दौड़ा और बच्चे को दे दिया। दीदी भी पौधा देखकर खुश हो गई। उसने गमला पकड़ लिया।

बच्चा बोला—"तीन रुपये बाद में जमा कर दूँगा।"

ठेलेवाले के कहा—"नहीं, अब और पैसे नहीं देने हैं।"

बच्चे ने बहुत खुश होकर ठेलेवाले को देखा और दीदी के साथ फूल के बारे में बातें करता हुआ घर की ओर चल दिया।

माँ ने कहा—"इसमें ज़्यादा पानी मत डालना!"

रात को सोने से पहले वह फूल के बारे में ही सोचता रहा। सपने में उसने बड़ा-सा फूल देखा और देखा कि वह फूल के ऊपर नाच रहा है। टिड्डा, तितली और मधुमक्खी भी उसके साथ नाच रहे हैं।

सुबह जब उसकी आँखें खुलीं, तो वह पौधें की ओर दौड़ा। सुन्दर फूल खिलखिलाता हुआ झूम रहा था। एक तितली उस पर बैठी हुई झूल रही थी। बच्चा उससे बातें करने के लिए पास आ गया। तितली डर गई। उड़कर उससे दूर जाने लगी।

बच्चा चिल्लाते हुए उससे बोला—"तितली रानी, आना। कल फिर मिलने आना।"

रावेंद्रकुमार रवि

भूल सुधार

'अनुराग' की जनवरी-मार्च' 07 अंक में 'आओ कहानी से चित्र बनायें' में लेखिका का नाम गलती से छूट गया था। जिसका हमें खेद है। इसकी लेखिका डॉ. अलका हर्ष 'शिवालिका' हैं।

कविताएँ

सयानी चुहिया

ऊची सैण्डिल काला चश्मा
जैकेट फैशनदार,
सेल्स मैन बन बिल्ली निकली
करने कारोबार,

चूहे के घर घण्टी बजाई
सूची रखी तैयार,
साबुन कंघा टूथपेस्ट पाउडर
ब्यौरा सब क्रमवार,

लाख लुभाया मन भरमाया
संग में फ्री का जाल बिछाया
किन्तु सयानी चुहिया ने
न खोला घर का द्वार।

फास्ट फूड

पिज्जा बर्गर चाउमिन नूडल
फास्ट फूड सुपरफास्ट
जल्दी जल्दी बढ़ता जाए
पेट कमर का व्यास,

देख के अपनी बेडौल काया
खा मोटापे की मार,
मन घबराया जी भरमाया
गरम हो गया दिमाग,

ठण्डा ठण्डा कूल कूल कह
ठण्ड में भी पीया कोला
ठण्डी ठण्डी आइसक्रीम
पर भी मन पूरा डोला,

पर बनने की जगह
और भी बिगड़ी जाती बात,
जिम जा जा कर पैसे खर्चे
चलें सम्हालें गात,

समझते समझते जब हम समझे
जंक फूड की चाल,
बिन पानी मछली सा तड़पे
जिह्वा हुई खराब,

हाय रे इससे बढ़िया थी
अपनी रोटी दाल,
चटखारे लेकर खाते थे
संग मूली गाजर दही अचार।
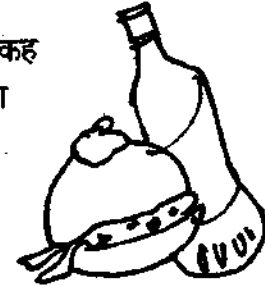
कविताएँ

नुस्खा पेटेण्ट

बन्दर जी ने खाकर पान
मुँह कर लिया अपना लाल,
बन्दरिया ने तोड़ी मेंहदी
रच डाले हाथ और गाल,

उनके देख निराले ढंग
पूरा वानर सेना दंग,
लगे पूछने क्या कण्टेण्ट
जोड़ी बोली नुस्खा पेटेण्ट।
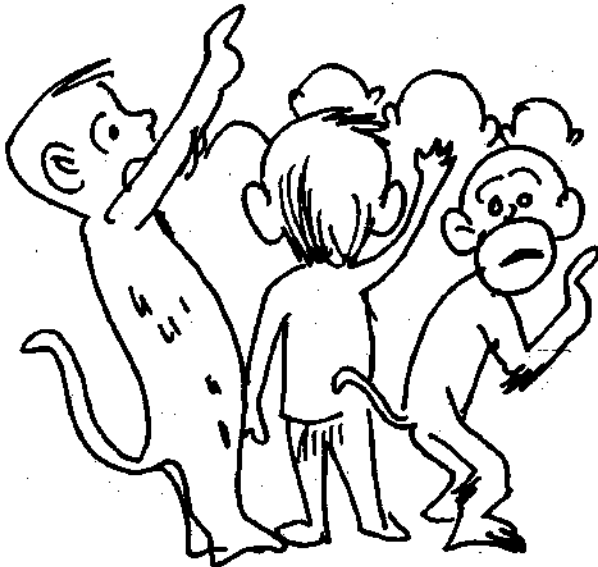
ट का टटक्रम

टट्टू टकबक टेढ़ा चल
टाप मटर का खेत,
टोनू टिंकू टिम्पी हिलमिल
टप्पा टप्पी खेल,

टर्राए टिटहरी टें टें
टुइंया भागे मेड़,
टोली दौड़े पीछे पीछे
टमाटर टुकड़े फेंक,

टाई टोपी टीम टाम
टिंगू टटक्रम टाल,
टमटम चल दी टनकपुर
टाँग झोगा भाग,

टिक्की बोले टना टन
टूंग टमी टटोल,
टिन्नी ताके टुकुर टुकुर
टकलू नापे तोंद,

टूटी टोटी टपके टप टप
टोकाटोकी टालमटोल,
टसुएं टपके टपा टप
खाली टंकी निहोर,

टाँग टूटी ट्रिन ट्रिन
टपोरी टण्टा छोड़,
टीन टप्पर टोह टाँग
टाटा टी का बोर्ड।

कविताएँ
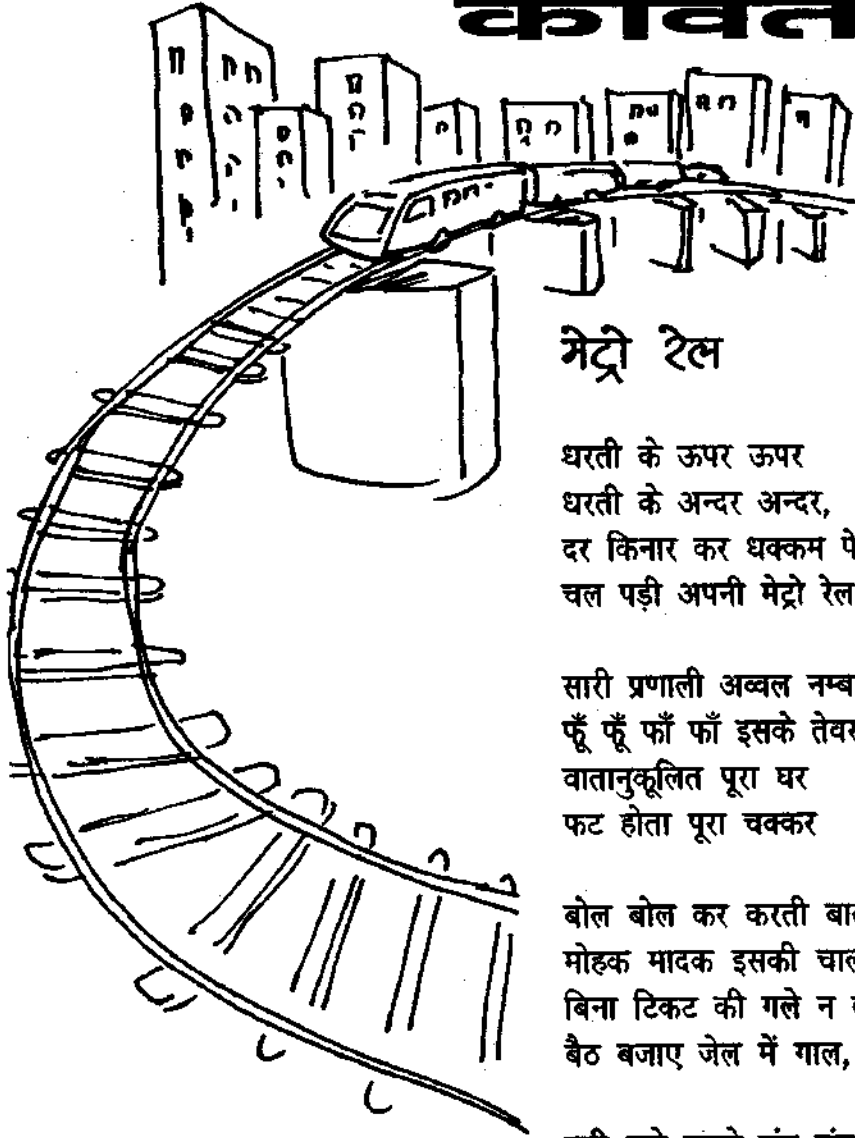
मेट्रो रेल

धरती के ऊपर ऊपर
धरती के अन्दर अन्दर,
दर किनार कर धक्कम पेल
चल पड़ी अपनी मेट्रो रेल,

सारी प्रणाली अव्वल नम्बर
फूँ फूँ फाँ फाँ इसके तेवर,
वातानुकूलित पूरा घर
फट होता पूरा चक्कर

बोल बोल कर करती बात
मोहक मादक इसकी चाल
बिना टिकट की गले न दाल
बैठ बजाए जेल में गाल,

घड़ी चले इसके संग संग
लेट लतीफी नहीं पसन्द,
दिल्ली दर्शन को जब आओ
बैठ देखना सब रंग ढंग।

डॉ. रीता हजेला 'आराधना'
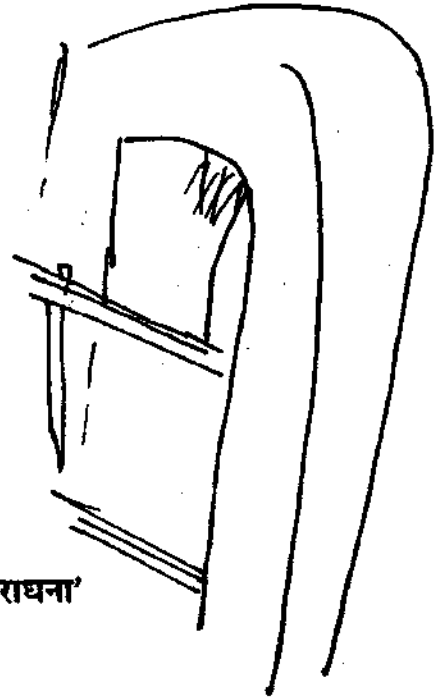
कविताएँ

हम और वे

ताऊ जी के बच्चे
भैंस चराएँ नहर में
पापा अफ़सर बने
हमें ले आए शहर में

हम तो दोपहरी बिताने
गुब्बारे फुला रहे
चाचाजी के बच्चे
गलीचे बना रहे

वक्त काटे नहीं कटे
हम वीसीडी चला रहे
बुआ जी के बच्चे
बीड़ी बना रहे

हम तो पढ़ लिखकर के
अफ़सर बन जाएँगे शहर में
खटते रहेंगे वे जीवन की
कड़ी दोपहर में।
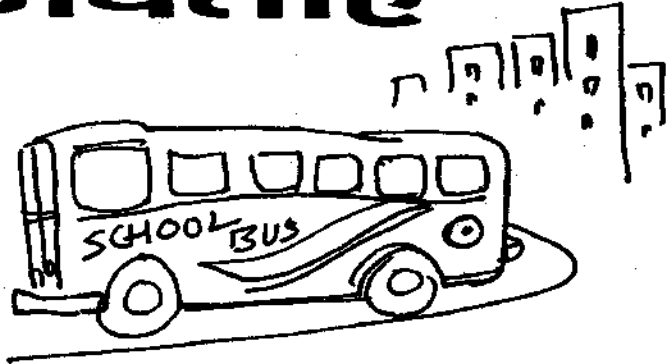
मैं तो कहानी लिखूँगा

भाई मैं कवि क्यों बनूँगा
मैं तो कहानी लिखूँगा

देखूँ तो थाली में सीरा
लिखूँ भी थाली में सीरा
उसे हलवा क्यों लिखूँगा
जब मैं कहानी लिखूँगा

मेरी कहानी के अन्दर
चूहे हाथी ना बनेंगे
बिन चूहों के दुनिया कैसी
चूहे शान से रहेंगे

भाई मैं नाम क्यों बदलूँगा
बात है वो ही लिखूँगा
जिसने आम खा लिया है
फिर भी काम ना किया है
उसको पेटू ही लिखूँगा
मैं तो ऐसा ही करूँगा

भाई मैं कवि क्यों बनूँगा
मैं तो कहानी लिखूँगा।

प्रभात

लिथुआनिया की लोककथा

एक समय की बात है। एक आदमी हमेशा अपनी पत्नी को ताने मारता रहता था कि उसका काम कितना आसान है। उसके पास तो समय ही समय रहता है।

वह अपनी पत्नी से कहता, "मैं बैल की तरह दिन भर खेतों में खटता हूँ जबकि तुम घर में आराम करती रहती हो, और समय बर्बाद करती हो। बल्कि मैं तो कहूँगा कि तुम मजे करती हो।"

उसकी पत्नी रोज़-रोज़ ये ताने सुन-सुनकर तंग आ गयी। एक दिन उसने कहा, "तुम और मैं अपने कामों को बदल क्यों नहीं लेते? मैं दिन में खेतों में जाऊँगी और तुम यहाँ रहकर घर की देखभाल करोगे। तब हम देखेंगे कि किसकी ज़िन्दगी कितनी आसान है।" आदमी बहुत खुश हुआ।

"अच्छी बात है," उसने कहा। "मैं कल से घर में रहूँगा और घर के सभी कामों को पूरा करूँगा और तुम बाहर जाकर घास काटोगी।" दूसरे दिन पत्नी खेत जाने के लिए तैयार हुई। जाने से पहले वह आश्वस्त नहीं थी क्योंकि वह जानती थी कि वह क्या करेगा। उसने अपने पति से कहा :

"आज शनिवार है, मैं रात के खाने के लिए घर आऊँगी इसलिए कुछ दलिया बना लेना। और गाय को चरागाह में ले जाना भूलना मत," आदमी सिर्फ़ मुस्करा दिया।

"चिन्ता मत करो, मैं सब कर लूँगा," उसने कहा। पत्नी चली गयी तो पति ने चुरुट जलाई और सोचने लगा कि कामों को कहाँ से शुरू करना चाहिए। उसने पहले दलिया बनाने की सोची। उसने बर्तन धोया, इसमें पानी भरा और पकाने लगा।

चुरुट बुझ रही थी तो उसने उसे फिर से जलाया, फिर उसने अँगीठी जलायी। धुआँ फूँकते -फूँकते उसका बुरा हाल हो रहा था, पर दलिया पकने का नाम ही नहीं ले रहा था। थोड़ी देर में पानी उबलने लगा और वह खड़ा होकर चूल्हे पर चढ़ी हुई दलिया को चलाता रहा। वह गाय के बारे में भूल गया और उसे तब याद आया जब गाय ने चिल्लाना शुरू किया।

"मैं अभी गाय को चारे के लिए बाहर ले जाता हूँ और फिर वापस आकर दलिया पका लूँगा," उसने सोचा। "या क्यों न तब तक इसमें कुछ और पानी डाल दिया जाये।"

वह पानी के लिए कुँए पर गया, पानी लाया और बर्तन में पानी डालने लगा, पर वह खुद को ज़्यादा पानी डालने से रोक नहीं पाया और वह इतना ज़्यादा हो गया कि बाहर बहने लगा और आग बुझ गयी। उसने फिर एक तीली जलाने की सोची, पर जैसे ही कि वह इसे करने जा रहा था गाय ने फिर से जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया।

"जरा ठहरो, मैं अभी तुम्हें ले आऊँगा!" आदमी चिल्लाया। "मुझे आग जला लेने दो।"

पर लकड़ी गीली थी और जल नहीं पायी तो उसने कुछ सूखे तिनके डाले। आखिरकार आग जल गई। बाहर गाय ने फिर से चिल्लाना शुरू किया तो आदमी उसे लेने के लिए दौड़ा। वह गोशाला में आया और खुद से कहा :

"अगर मैं गाय को चारे के लिए बाहर ले जाता हूँ तो या तो दलिया जल चुकी होगी या आग बुझ जायेगी। मैं सोचता हूँ कि गाय को बाहर ही बाँध दूँ, पास में ही घास है उसे खाती रहेगी और घास तो हर जगह एक ही जैसी होती है।"

और आदमी ने गाय के गले में एक रस्सी घुमाकर फेंकी, उसे गोशाला के बाहर लाया और उसके पैरों को बाँध दिया और खुद दुबारा रसोई में लौट आया।

उसे रास्ते में ही याद आया कि उसे अभी तो मक्खन निकालना था। उसी पल वह मलाई और मक्खन लेने के लिए अनाजघर में गया। वह फिर रसोई में लौट आया और मक्खन निकालने लगा, लेकिन प्यास लग रही थी,

तो उसने चम्मच नीचे रखा और अनाजघर में आया जहाँ पीपे में सेब का रस रखा था, हड़बड़ी में वह रसोई का दरवाज़ा बन्द करना भूल गया था। बस फिर क्या था! सूअर और उसके सात छोटे बच्चे आँगन में थे, रसोई का दरवाज़ा खुला देखकर अनाजघर में घुस आये।

आदमी ने उन्हें तब देखा जब वह सेब का रस पीने के लिए पीपे का ढक्कन खोल रहा था। उसे याद आ रहा था कि मलाई का बर्तन रसोई के फर्श पर पड़ा था, वह घर के अन्दर तेज़ी से भागा, और पीपे का ढक्कन खुला छोड़ दिया।

वह रसोई की ओर भागा, और देखा कि वहाँ पर फर्श पर मलाई में सूअर लोट रहा था। उसने लपककर लाठी उठाई और सूअर के मुँह पर मारी और सूअर गिर पड़ा और मर गया। अब वहाँ करने को कुछ नहीं बचा था।

तभी अचानक उसे फिर याद आया कि उसने तो पीपे का ढक्कन खुला छोड़ दिया था। वह अनाजघर में भागा और देखा कि पीपा खुला पाया और फर्श पर सेब का रस बिखरा हुआ था। वह क्या करता?

वह अनाजघर में चारों ओर घूमकर देखने लगा कि कहीं कुछ मक्खन बनाने के लिए मलाई मिल जाये पर कुछ नहीं मिला। अब वह वापस रसोई में आकर कामों को व्यवस्थित करने के बारे में सोचने लगा। तभी उसे ख्याल आया कि खाली पीपा सूख ज़ाने की वजह से टूट गया था।

उसे डर था कि कहीं रसोई में और कोई जानवर न हो इसलिए उसने मथनी उठा ली। वह पानी लेने के लिए कुँए पर गया। उसने कुँए के किनारे मथनी रख दी और बाल्टी को नीचे डालकर पानी निकालने लगा।

जब वह पीपे में पानी भर रहा था तो उसे दलिया का ख्याल आया। रसोईघर से कुछ जलने की महक आ रही थी।

"गन्ध से कोई फर्क नहीं पड़ता है," उसने खुद से कहा, "असल बात है दलिया का स्वादिष्ट होना।"

उसने दलिया को जितना सम्भव हो सकता था अच्छा बनाने का निश्चय किया, अगर इसमें कुछ मक्खन डाल दिया जाये तो यह बेहतर होगा। ऐसा सोचकर वह अनाजघर में फिर देखने के लिए गया कि पुराने स्टाक में कुछ मक्खन तो नहीं है। वह हर जगह देखने लगा पर उसे कहीं नहीं मिला। अन्त में, उसने सोचा कि शायद उसकी पत्नी ने किसी जार में मक्खन रखा हो। वह एक बड़े से पीपे में देखने के लिए झुका और उसी में उलट गया।

फिर क्या था, पीपे का आटा फर्श पर फैल गया, और उसे छींक पर छींक आने लगी। वह पीपे के बाहर आना चाहता था, पर नहीं निकल सका।

पत्नी रात के खाने के लिए घर लौटी, तो वहाँ पर उसका पति कहीं दिखाई नहीं दिया।

आँगन में सूअर मरा पड़ा था, रसोई का फर्श मलाई से चिपचिपा था, गाय गोशाला के बाहर बँधी थी, उसका पैर टूटा था, और बर्तन में दलिया कोयले की तरह जली हुई थी पर उसका पति कहीं नजर नहीं आ रहा था।

पत्नी अनाजघर गयी, उसने पीपे में झाँका और देखा कि वह वहाँ पड़ा था। उसने आटे के पीपे से बाहर निकलने में उसकी मदद की। वह एक भली महिला थी, और उसने चीज़ों को बिखेरने के लिए उसे डाँटा नहीं। उसने हर चीज़ को साफ़ किया, दलिया पकायी, खुद और अपने पति को दी और बर्तनों को साफ़ करके आलमारी में लगा दिया। उस दिन से आदमी ने अपनी पत्नी की गल्तियाँ नहीं निकालीं और उससे कभी नहीं कहा कि उसका काम बड़ा आसान है।

अनुवाद : रूबी

कविताएँ

वर्षा का आनन्द उठाए

रिमझिम-रिमझिम बरसे पानी।
भींगे घर की छप्पर छानी।।
टर्र-टर्र कर मेंढक बोले।
बच्चों ने दरवाज़े खोले।।
शोभित ने आवाज़ लगाई।
शोर मचाते हो क्यों भाई?
बोले मेंढक, तुम भी आओ।
पोखर में डुबकियाँ लगाओ।।
एक साथ मिल गाना गायें।
वर्षा का आनन्द उठायें।।

अनिल द्विवेदी 'तपन'
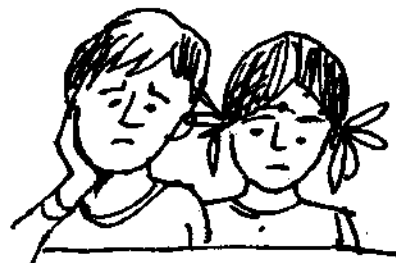
पापा तुमने कभी न जाना

पापा तुमने कभी न जाना
क्यों हम गुमसुम होते हैं।
मम्मी तुमने कभी न समझा
आखिर क्यों हम रोते हैं।

नहीं चाहिए खेल-खिलौने,
नहीं चाकलेट, ना टाफी।
मम्मी प्यार करो, दुलराओ
बस इतना ही है काफ़ी।

थोड़ा समय हमें दो पापा
धन्धे से छुट्टी पाकर।
कभी तो बैठो पास हमारे
आफिस से जल्दी आकर

पापा हमसे कहें कहानी,
मम्मी गर लोरी गायें।
फिर तो हम खुश रहें हमेशा
कभी न रोयें, चिल्लायें।

अखिलेश श्रीवास्तव चमन

कविताएँ

बोगनविलेया के फूलों से

सोकर उठता हूँ जब सुबह को मैं
तो ठण्डी बयारों के साथ तुम्हें झूमता देखता हूँ
'बोगनविलेया' के फूलों

हरे रंग के पेड़ों को तुमने
ढाँप रखा है अपनी पीली-श्वेत सी
आभा से

कहीं-कहीं पर ठिठोली करते
लाल रंग के तुम्हारे भाइयों को भी
पाता हूँ मैं

पक्षियों का कलरव
उस पर तुम्हारी यह थिरकन
बन जाती है एक अद्‌भुत समा
मेरे लिये

मेरा कोई दोस्त नहीं है
उस दोस्त को तुम्हारे अन्दर
पाता हूँ मैं
तुमसे जी भरकर बातें करना
चाहता हूँ मैं।

सेमल से पुनः

तुम पर फूल अभी तक नहीं आये
सेमल
और मैं तुमसे बिछुड़ रहा हूँ
सेमल
अभी तुम्हारी शाखें हैं सूनी
छायी नहीं है बहार अब तक तुम पर,
उम्मीद करता हूँ जल्द ही लाल
फूलों से लद जाओगे तुम
और मैं तब तुमसे मिलने एक बार आऊँगा ज़रूर
हाँ एक बार।

विप्लव

अनुराग बाल कम्यून के बच्चों की कलम से

प्यारे दोस्तो,

अनुराग बाल पत्रिका के पिछले अंकों में तुमने 'अनुराग ट्रस्ट' के बारे में पढ़ा होगा। यह संस्था बच्चों के स्वस्थ सांस्कृतिक और वैज्ञानिक विकास लिए बहुत से काम करती है। इन्हीं में से एक है अनुराग बाल कम्यून। यहाँ कई बच्चे एक साथ रहते हैं, पढ़ते हैं, नई-नई बातें सीखते हैं और एक स्वतंत्र माहौल में भविष्य के स्वतंत्र और जिम्मेदार नागरिक बनने की राह पर शुरुआती कदम रखते हैं। अभी गोरखपुर व नोएडा में चल रहे ऐसे कम्यून में रहने वाले बच्चों ने अपने कुछ मजेदार अनुभव लिखकर भेजे हैं। तुम लोग भी ऐसी चीज़ें लिखकर भेज सकते हो। — सम्पादक

घड़ी की छलाँग

हम लोगों के पूरे कम्यून के बच्चों की छमाही परीक्षा करीब आ रही थी। हम लोगों ने सोचा सुबह-सुबह उठकर पढ़ाई की जाये। लेकिन सुबह कैसे उठा जाये यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न था। तभी स्मृति दीदी का ध्यान फ्रिज पर बैठी घड़ी पर गया। उन दिनों उस घड़ी के पास काम बहुत अधिक था। इसलिए वह दिन-रात जागती रहती थी वह कभी भी सोती नहीं थी वह आराम भी नहीं करती थी। स्मृति दीदी उससे सुबह उठाने के लिए कहने लगी लेकिन, घड़ी ने उठने से साफ़-साफ़ इंकार कर दिया। फिर स्मृति दीदी गुस्सा हो गयी और पूरे कम्यून के बच्चों के साथ वापस फिर घड़ी के पास आयी। इतने बच्चों को एक साथ देखते ही घड़ी समझ गयी कि इन लोगों को सुबह उठाने में ही बुद्धिमानी है। हमलोग कुछ कहे इससे पहले ही घड़ी हम लोगों को उठाने के लिए
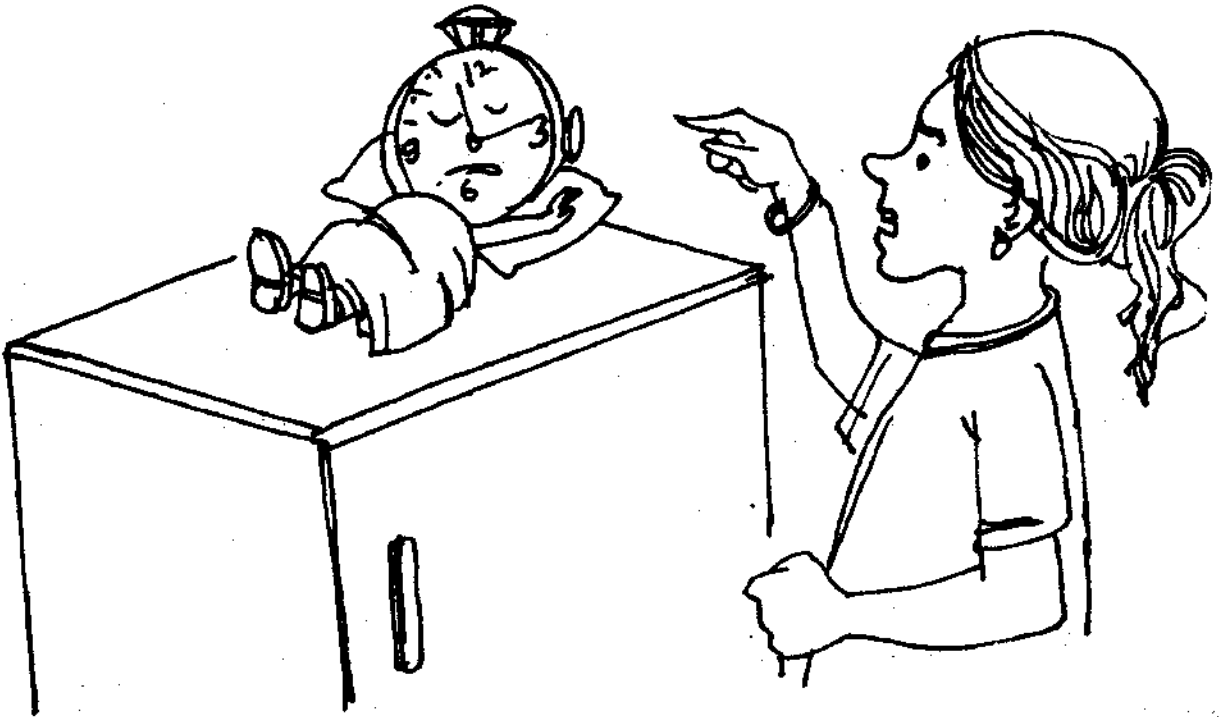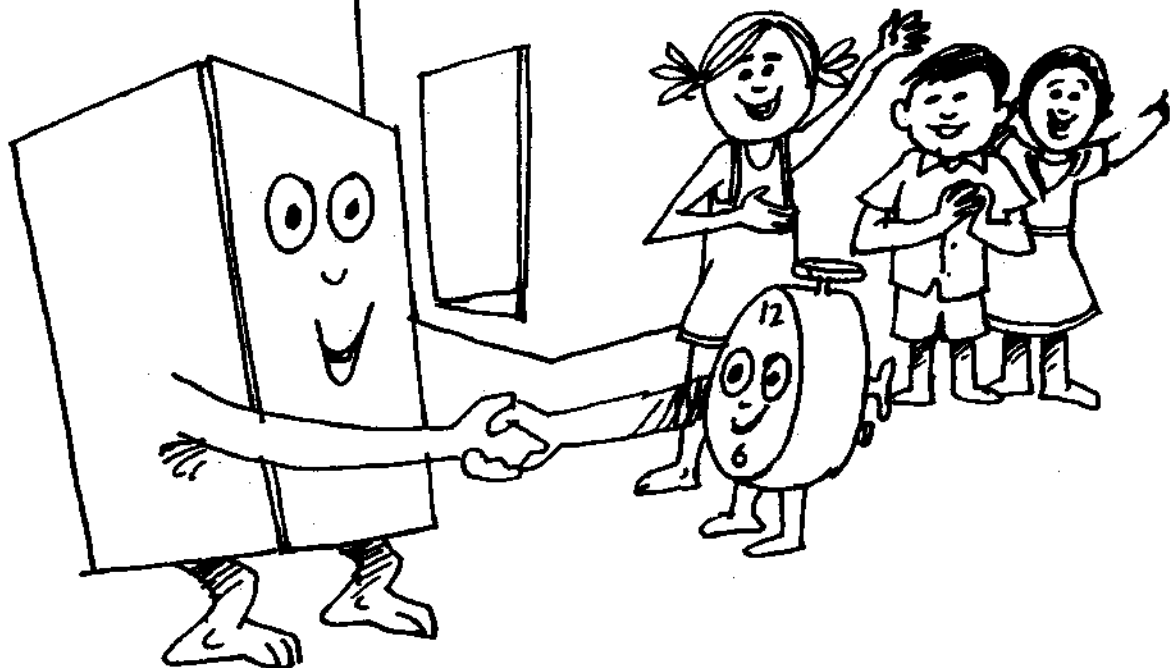
तैयार हो गयी।

फिर हमलोग जितने बजे कहते घड़ी जगा देती, फिर उठना न उठना हमलोगों के ऊपर निर्भर करता था, कभी हम उठते कभी नहीं उठते। घड़ी स्मृति दीदी से दोस्ती करना चाहती थी लेकिन इस बात का उन्हें जरा-भी एहसास नहीं था। घड़ी स्मृति दीदी के पास रहना चाहती थी इसलिए उसने एक उपाय खोज निकाला। उसने स्मृति दीदी से कहा मुझे यहाँ रात में मच्छर काटते हैं मुझे मच्छरदानी के अन्दर बैठा लो।

स्मृति दीदी उसको अन्दर करना नहीं चाहती थी। लेकिन उन्होंने सोचा अगर घड़ी मच्छरदानी के अन्दर रहेगी और मैं भी अन्दर रहूँगी तो मुझे घड़ी का चीखना (अलार्म) बन्द करने बिस्तर से बाहर जाना नहीं पड़ेगा और मैं थोड़ी देर और सोने का मजा ले सकूँगी। घड़ी का चीखना बन्द करने के लिए उन्हें ही उठना पड़ता था क्योंकि और किसी को नींद में लस्त होने की वजह से घड़ी का चीखना सुनाई नहीं पड़ता था। इन सारी कठिनाइयों से बचने के लिए स्मृति दीदी ने खुशी-खुशी घड़ी को अन्दर बिठा लिया। घड़ी मच्छरदानी ने अन्दर भी अपना काम करती रहती थी।

सुबह उठते ही उसे फ्रिज पर रख दिया जाता और फिर रात में मच्छरदानी के अन्दर। लेकिन एक दिन हमलोग उसे मच्छरदानी से बाहर रखना भूल गये। थोड़ी देर बाद स्मृति दीदी आयी और मच्छरदानी हटाने लगी उन्होंने घड़ी को बिस्तर से उतरने को कहा जैसे ही स्मृति दीदी ने मच्छरदानी थोड़ा ऊपर उठाया वैसे ही घड़ी ने नीचे की ओर छलाँग लगा दी। घड़ी बेहोश हो गयी। उन दिनों घड़ी एक चश्मा भी लगाती थी जो बहुत ही प्यारा था। लेकिन उस चश्मे में केवल एक ही शीशा था वो भी निकल गया लेकिन इस सबके बावजूद घड़ी अपना काम करती रही। कम्यून के अजय ने घड़ी देखा तो उसे घड़ी की हालत देखी नहीं गयी। लेकिन चश्मे के बगैर काम करने में उसे थोड़ी दिक्कत हो रही थी। अजय गया और उसका चश्मा बनाकर ले आया।

और फिर हमलोगों ने घड़ी और फ्रिज की दोस्ती करा दी। अब फ्रिज और घड़ी अपनी जगह पर बैठे रहते हैं इसलिए उनकी दोस्ती और गहरी हो गयी। घड़ी और फ्रिज इस दोस्ती से जितना खुश थे उनकी इस दोस्ती से हमलोग भी उतना ही खुश थे।

शिवा

छोटी बिल्ली

एक बार कम्यून के सारे बच्चे मैदान में खेल रहे थे। तभी हम लोगों ने एक आवाज़ सुनी। वह आवाज़ हमलोगों को बहुत प्यारी लगी। अब हमलोग खेल को बन्द करके उस आवाज़ के पीछे लग गये। हमलोग मैदान से छत और छत से मैदान आ-जा रहे थे। अब तक वह आवाज़ आनी बन्द हो गयी थी। हमलोग बैठ गये। थोड़ी देर बाद फिर आवाज़ आयी। हमलोगों में खुशी की लहर दौड़ गयी। जोश के साथ हमलोग फिर आवाज़ के पीछे लग गये। काफ़ी देर तक उस आवाज़ को ढूँढ़ते रहे। आखिरकार हमलोग थककर बैठ गये और एक दूसरे से कहने लगे कि आखिर यह आवाज़ कहाँ से आ रही है। तभी अचानक हमलोगों को ध्यान संस्कृति कुटीर पर रखी ईंटों और लकड़ियों पर गया। हमलोगों को फिर जोश आया और कुछ लोग ईंटों और लकड़ियों पर चढ़े। कुछ लोग संस्कृति कुटीर में इधर-उधर बिखर गये ताकि जिस जानवर की आवाज़ आ रही थी वह भागने न पाये। ईंटों और लकड़ियों में चढ़े लोगों में से एक बोला 'बिल्ली'। सब लोग चौक गये और इधर-उधर देखने लगे। हम लोगों ने बिल्ली को पकड़ना चाहा और सभी लोग ईंटों और लकड़ियों पर चढ़ गये और बिल्ली को किसी तरह बाहर निकाला वह बहुत ही छोटी और प्यारी बिल्ली थी। अच्छा तो हमलोग जो आवाज़ सुनकर परेशान हो रहे थे, वह इस छोटी बिल्ली की थी। हमलोगों ने सोचा कि इस प्यारी बिल्ली को इस कम्यून का सदस्य बना लेते हैं। लेकिन बिल्ली हमलोगों से भी चालाक थी। उसने सोचा कि अगर मैं इस कम्यून की सदस्य हो गयी तो मुझे काम करना पड़ेगा और बिल्ली नौ दो ग्यारह हो गयी। कुछ दिनों बाद हमलोगों को वही छोटी बिल्ली फिर दिखी, इस बार हमलोगों ने एक चाल चली कि पहले कमरे में एक-दो लोग जाए और बाकी लोग बिल्ली को कमरे की तरफ़ दौड़ते हुए लायेंगे और जब बिल्ली कमरे के अन्दर चली जाए तो अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लेंगे और फिर बिल्ली आसानी से पकड़ में आ जाएगी। लेकिन बिल्ली ने फिर हमलोगों का प्लान बिगाड़ दिया और वह कमरे से निकलकर भाग गयी। लेकिन हमलोग भी कम नहीं थे ठान लिया कि बिल्ली को पकड़ना है और फिर हमलोग उसके पीछे भागे। बिल्ली को छत का दरवाज़ा खुला मिला और वह सीढ़ियों से छत पर भाग गयी और कमरे में घुस गयी उसने सोचा ये लोग यहाँ क्या करने आयेंगे। और वह छिप गयी। जब हमलोग अन्दर गये तो बिल्ली को इधर-उधर देखा लेकिन बिल्ली कहीं नहीं दिखी तो हमलोग कमरे से बाहर आ गये और बिल्ली धोखा खा गयी कि हमलोग अब नीचे चले गये होंगे और उसने खुशी से 'म्याऊँ-म्याऊँ' किया। हमलोगों को
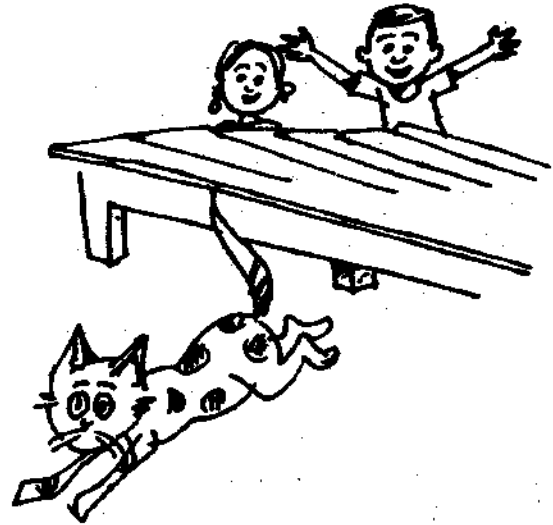
समझते देर नहीं लगी कि बिल्ली इसी कमरे में है और हमलोग फिर से कमरे में गये और इधर-उधर देखा लेकिन बिल्ली फिर भी नहीं दिखी। हमलोगों ने सोचा आखिर बिल्ली गयी कहाँ? फिर हमने पलँग के नीचे देखा बिल्ली वहीं छिपी बैठी हुई थी। हमारे चेहरे पर खुशी दौड़ गयी और बिल्ली को पकड़ने के लिए लपके। बिल्ली ने सोचा अब कैसे बचूँ कोई उपाय जल्दी से निकालूँ नहीं तो ये लोग मुझे पकड़ लेंगे। उसने देखा कि दीवार पर एक ट्यूबलाइट लगी हुई है वह उसी के बीच में घुस गयी। अब तो हमलोगों को उसे पकड़ना और आसान हो गया था क्योंकि वह तो ट्यूबलाइट के बीच में फँसी हुई थी और वह भाग भी नहीं सकती थी। हमलोगों ने उसे पकड़ लिया और उसे चावल और दूध लाकर दिया और एक लम्बी-सी रस्सी में बाँध दिया। लेकिन उसने कुछ नहीं खाया। क्यों नहीं खाया यह तो उसी से पूछना पड़ेगा। हमलोगों ने उससे पूछा लेकिन उसने गुस्से के कारण कुछ नहीं बताया।

उस शाम आण्टी जी बाहर गयी हुई थी। जब शाम को आण्टी जी आयी तो हमलोगों ने उन्हें बताया कि हमने एक बिल्ली पकड़ी है और उसे रखना चाहते हैं तो उन्होंने कहा कि किसी को बन्धक बनाकर रखना अच्छी बात नहीं है लेकिन फिर भी अगर तुम लोगों का मन है तो रख लो। आण्टी की बात हमलोगों के समझ में आ गयी और हमने बिल्ली को छोड़ दिया।

अंजू
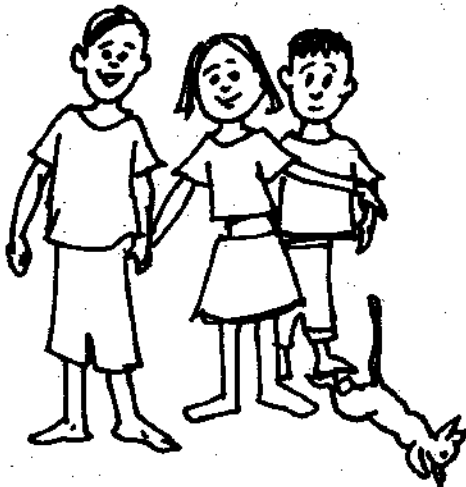
बादल की कहानी

बादल आया, बादल आया
उमड़-घुमड़ कर बादल आया,
देख पुस्तक प्रदर्शनी को ललचाया
लाख कोशिश कर किताबें न पाया।

यह देखकर वह गुस्साया
इतने में उसने मौसम को घुमाया
चटपट उसने हवा को बुलवाया
और किताबों को उसने उड़वाया।

फिर भी वह किताबों को न पाया
यह देख वह तिलमिलाया
फिर उसने दिमाग लगाया
पानी बनकर ज़मीन पर आया
किताबों को वह पाया
लोगों का मन बहलाया
मौसम को सुहावना बनाया।

श्रुति/नन्दिता

हाथी

कहीं कोई टहनी नहीं चटकती, कोई पत्ता नहीं हिलता—ऐसे दबे पाँव हाथी जंगल से निकलता है। पास से देखो तो लगता है काला पहाड़ खड़ा है। टाँगें उसकी तनों जैसी हैं, कान नाव के पालों जैसे और बाहर निकले दो लम्बे दाँत टेढ़े और मजबूत। अपनी सूँड़ से वह पूरी झाड़ी जड़ समेत उखाड़ लेता है और मुँह में डालकर धीरे-धीरे चबाता है।

हाथी इतना ताकतवर है कि वह किसी से नहीं डरता।
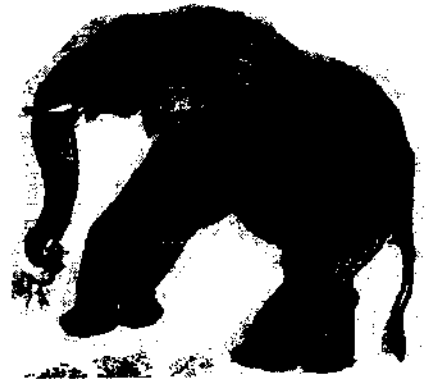
अजगर

जंगल के बीच मैदान में एक बहुत पुराना पेड़ उग रहा है। उसकी जड़ें जमीन में से निकल आयी हैं, मोटी डालें मुड़कर आपस में गुंथ गयी हैं। एक डाल तो तने पर साँप की तरह लिपटी हुई है। यह तो सचमुच ही डाल नहीं, साँप है—शक्तिशाली और भयानक अजगर।

सतर्क हिरन पेड़ तले से नहीं गुजर सकता, कोई छोटा जानवर पास से नहीं निकल सकता, पेड़ पर कोई पंछी नहीं बैठ सकता—अजगर झट से उसे अपनी कुण्डली में दबोच लेगा और हड़प जायेगा।

दरियाई घोड़ा

दरियाई घोड़ा अपनी ठूँठ जैसी छोटी-छोटी टाँगों पर मुश्किल से चलता है। और जब चलता है तो इसका सारा चाम थलथल हिलता है। इतना पेटू है यह कि जिस मैदान में चला आयेगा, वहाँ की सारी घास और पौधे खा जायेगा, जो नहीं खा पायेगा, उन्हें रौंद डालेगा। फिर नदी में सुस्ताने चला जाता है। नदी का पानी तो इसके लिए नरम सेज ही है। जब इसका आराम पूरा हो जाता है तो खेलने लगता है। नदी में यह बेढब नहीं, बड़ा फुर्तीला जानवर होता है। तैरता है, डुबकियाँ लगाता है, नदी के तले पर उगते शैवाल तोड़ता है। बीच-बीच में सन्दूक जैसा अपना मुँह खोलकर चिंघाड़ता है, लगता है, जैसे दसियों घोड़े एक साथ हिनहिनाये हों।

पिल्ले की समझदारी

गतिविधियाँ - बाल सर्जनात्मकता शिविर

लखनऊ

बच्चों की सर्जनात्मक प्रतिभा को उभारने और उनकी रचनाशीलता को विकसित करने के लिए 'अनुराग ट्रस्ट' लगातार काम करता आ रहा है। इस कड़ी में अनुराग ट्रस्ट हर साल गर्मियों की छुट्टियों में ग्रीष्मकालीन सृजनात्मक शिविरों का भी आयोजन करता है। जिसमें विषय के विशेषज्ञों द्वारा बच्चों को प्रशिक्षण दिलाया जाता है। इस वर्ष के जून माह में आठ दिवसीय शिविर का आयोजन अनुराग ट्रस्ट का मुख्य कार्यालय निरालानगर लखनऊ में सम्पन्न हुआ।

इस आठ दिवसीय शिविर में बच्चों को नाटक, कार्टून, चित्र, संगीत, मिट्टी के खिलौने व मुखौटा बनाने का प्रशिक्षण दिया गया।

शिविर में बच्चों को नाटक 'दोन किहोते' सर्वान्तेस की विश्व प्रसिद्ध चर्चित कृति का प्रशिक्षण दिया गया। जिसका पात्र 'दोन किहोते' कल्पनाओं में जीने वाला व्यक्ति है जो तरह-तरह के हवाई किले बनाता है सिर्फ़ किताबों में डूबा रहता है। दूसरा नाटक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का 'भौं-भौं खों-खों' था। दोनों नाटकों का प्रशिक्षण, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली से प्रशिक्षित और मुम्बई में विभिन्न टी.वी. चैनलों और फिल्मों की क्रिएटिव प्रोग्रामर सुश्री वत्सला ने दिया।

प्रातः 8 बजे से योग और व्यायाम के प्रशिक्षण के साथ शुरू होने वाले शिविर में बच्चों का उत्साह देखकर तो यही लगता था कि आधुनिक शिक्षा व्यवस्था की रूटीनी कवायद बच्चों की सर्जनात्मकता को अवश्य ही दबा रही है क्योंकि पूरे शिविर में बच्चों ने जिस उत्साह से गीतों और नाटकों की इस आठ दिन की अल्पावधि में प्रस्तुति दी उससे बच्चों के अभिभावक अचम्भित थे। अपने ही समक्ष अपने बच्चे की प्रस्तुति पर उन्हें यकीन नहीं हो रहा था।

शिविर में बच्चों ने गीतों के माध्यम से सीखा कि इंसान की ज़िन्दगी वही बेहतर है जो अपने लिए नहीं बल्कि समाज के लिए जीता है, और प्यार बाँटता चलता है। ये गीत थे–'अपने लिए जिए तो क्या जिए...', 'प्यार बाँटते चलो....'। इन गीतों का प्रशिक्षण नमिता और गीतिका ने दिया।

नाक कितनी जरूरी चीज़ होती है। यह सभी जानते हैं, किसी की नाक छूना आसान नहीं बल्कि खतरनाक भी हो सकता है। क्या लालू यादव या मुलायम सिंह यादव की नाक कोई छू सकता है? पर एक कार्टूनिस्ट तो सबकी

नाक छू सकता है। इस शिविर में कार्टून के माध्यम से बच्चों ने बड़ों-बड़ों के चेहरे और नाक बनाना सीखा, कार्टून में जितनी बड़ी चाहो उतनी बड़ी नाक बना दो, कार्टून के चरित्र पर कोई फर्क नहीं पड़ता, चाहे सिर जितना बड़ा बना दो, पैर हाथ कितने ही बड़े या छोटे बना दो कार्टून तो कार्टून। बच्चों ने हँसी के मारे लोट-पोट होते हुए कार्टून का प्रशिक्षण प्राप्त किया। कार्टून का प्रशिक्षण कार्टूनिस्ट रामबाबू ने दिया।

कार्टून का मामला आए तो बड़े-बड़े भी बच्चे बन जाते हैं इसलिए कार्टून प्रशिक्षण के समय बच्चों के बीच बड़े-बूढ़े बच्चे भी सीखने के लिए घुस गए थे।

हाथी-घोड़ा बनाना कितना आसान है। यह शिविर में क्ले मॉडलिंग के प्रशिक्षण के दौरान बच्चों को पता चला। हाथी के जितना बड़ा चूहा तो बनाना बच्चों ने क्ले मॉडलिंग के दौरान ही पता चला। क्ले मॉडलिंग में इसके अलावा बच्चों ने बिल्ली, मछली, साँप और बैल तथा खरगोश बनाना भी सीखा। क्ले मॉडलिंग का प्रशिक्षण कला एवं शिल्प महाविद्यालय के सेरामिक आर्टिस्ट रतन जी ने दिया।

हाथ के पंजे से रंग-बिरंगा मयूर, पेड़ और लैण्डस्केप को बनाना सिखाया नवोदय विद्यालय बिजनौर के कला अध्यापक राकेश शर्मा ने। उन्होंने भू-दृश्य में जल रंगों की तकनीक से भी बच्चों को परिचित कराया।

राक्षस कितना डरावना होता है सब बच्चे उससे डरते हैं, किन्तु बच्चों ने उसी का मुखौटा बनाना सबसे पहले पसन्द किया। कपड़े, काग़ज़, दफ्ती और रंग से बच्चों ने बन्दर, हाथी, बिल्ली और शेर के मुखौटा बनाना सीखा। मुखौटा बनाने में सुश्री वत्सला ने बच्चों को नाटक में मंच पर प्रयोग होने वाले मुखौटों का भी प्रशिक्षण दिया।

शिविर के आखिरी दिन बच्चों द्वारा बनाये हुए चित्रों, मुखौटों और मिट्टी के खिलौनों की प्रदर्शनी लगाई गई तथा नाटकों व गीतों का मंचन बड़ी संख्या में उपस्थित अभिभावकों के समक्ष किया गया।

कार्यक्रम का समापन अनुराग ट्रस्ट की अध्यक्ष कमला पाण्डेय द्वारा प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित करने के साथ हुआ।

शिविर में अपने बच्चों की प्रस्तुति से अति-उत्साहित अभिभावकों की प्रतिक्रिया ने एक बार फिर यह साबित कर दिया कि यदि बच्चों को सही समय पर उनकी रचनात्मकता को पहचान कर उसे विकसित किया जाए तो आज का बच्चा कल का कोई लेखक, कवि, चित्रकार, नाटककार के रूप में समाज को एक सकारात्मक दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। सभी अभिभावक अनुराग ट्रस्ट को सहयोग देते रहने और शिविर की अवधि को और अधिक दिनों तक करने की राय दे रहे थे।

इलाहाबाद

आज के नरभक्षी सामाजिक परिवेश में बच्चों को बचाना सबसे जरूरी है। उन्हें ऐसे ज्ञान और संस्कृति से लैस करना होगा जो एक ऐसी दुनिया की रचना में उनकी मदद करे जो हमारी आज की दुनिया से बेहतर हो। यही उद्देश्य लेकर अनुराग ट्रस्ट की ओर से 23 मई से 30 मई तक सात दिवसीय बाल सर्जनात्मकता शिविर का आयोजन किया गया।

इस सात दिवसीय शिविर में बच्चों को कुछ चुनिन्दा गीतों, नाटकों, क्ले मॉडलिंग, मुखौटा निर्माण और पेण्टिंग का प्रशिक्षण दिया गया।

सत्र की शुरुआत 8 बजे व्यायाम से होती थी। उसके बाद संगीत की शुरुआत होती थी। जिसमें उन्हें कुछ चुनिन्दा गीत सिखाये गये। मूर्तिकला में बच्चों को कछुआ, मछली, जोकर, मगरमच्छ आदि बनाना सिखाया गया। इसके अलावा पेण्टिंग और मुखौटे बनाने की कला भी सिखाई गई।

सत्र के आखिरी दिन बच्चों द्वारा शिविर के दौरान सीखे गये सामानों की प्रदर्शनी लगाई और सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

बच्चों द्वारा प्रस्तुत गीतों में—'प्यार है जिन्दगी की निशानी.... तुमको ले न डूबे कहीं अपनी ये लड़ाई... नाम कुछ हो मगर ये ना भूलो, सबसे पहले तो इंसान तुम हो' में जहाँ एक ओर बच्चे बड़ों को सीख देते और इंसानियत का पाठ पढ़ाते दिखाई पड़ रहे थे, वहीं दूसरी ओर 'होंगे कामयाब....' में उम्मीदों से लबरेज पैगाम दे रहे थे। हारने का मतलब रुकना नहीं होता' यह सन्देश 'रुक जाना नहीं तू कहीं हार के...' के माध्यम से ये नन्हे-मुन्ने दर्शकों तक पहुँचा रहे थे। इसके अलावा 'अपने लिए जिये तो क्या जिये, तू जी ऐ दिल जमाने के लिए', और 'पोंछकर अश्क अपनी आँखों से मुस्कुराओ तो कोई बात बने' दर्शकों ने काफ़ी पसन्द किया।

सात दिन की छोटी-सी अवधि में दो नृत्य नाटिका और दो बड़े नाटक तैयार कराये गये। अन्तोन चेखव के नाटक 'गिरगिट' ने जहाँ एक तरफ़ दर्शकों को गुदगुदाया वहीं पूँजी की चाकरी करने वाले गिरगिट की तरह रंग बदलते हुए भ्रष्ट पुलिस अफ़सरों पर करारी चोट की। दूसरा नाटक प्रेमचन्द की 'ईदगाह' कहानी पर आधारित था। जो बालमन की संवेदना, रिश्ते की मानवीयता और अद्भुत आत्मत्याग की भावना से लबरेज था। इसके अलावा दो नृत्य नाटिका के रूप में थे। जिसे कम उम्र के बच्चों ने तैयार किया था। पहले बच्चों का घोषणापत्र—'जो है इससे बेहतर दुनिया हमें चाहिए...' और दूसरा जंग के ख़िलाफ़ एक कविता थी जिसमें युद्ध भड़काने वाले देशों को मुर्गा बनाने और चीं बुलवाने की बात कही गई थी। छोटे-छोटे बच्चों के मुँह से ऐसी कविता लोगों को मंत्रमुग्ध कर रही थी। समापन का संचालन 'दिशा' की नमिता ने किया। अन्त में बच्चों को पुरस्कृत किया गया और प्रमाण-पत्र दिया गया।
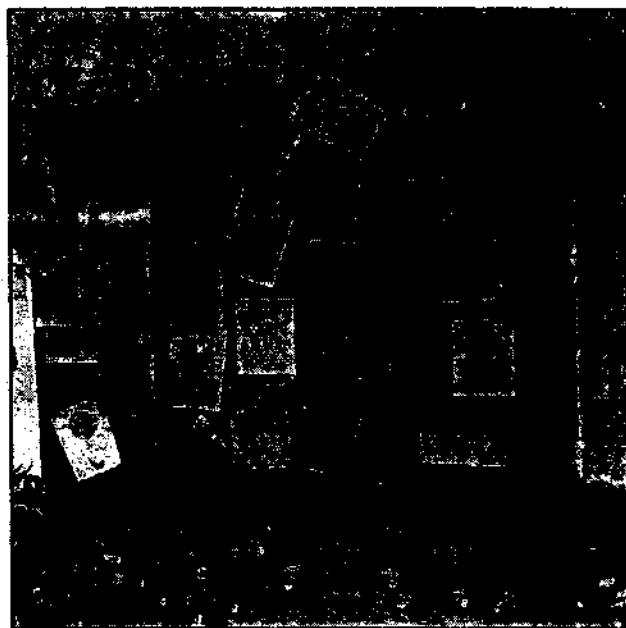
अभिभावकों ने बच्चों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रमों की सराहना की और लगातार ऐसे शिविर लगाने की बात की। इतने कम दिनों में बच्चों ने इतना कुछ सीखा ये देखकर अभिभावक बहुत ही हतप्रभ थे। बच्चों के अभिभावकों ने बार-बार कहा कि उन्हें अपने बच्चों के व्यक्तित्व में बदलाव दिख रहा है। चुप-चुप रहने वाले बच्चे ज़्यादा मुखर हो गये हैं।

अगर बच्चों को कम उम्र से ही ऐसा माहौल दिया जाए और उनकी रचनात्मकता को पहचानकर निखारने की कोशिश की जाए तो ये ही बच्चे कल के संगीतकार, नाटककार, चित्रकार, अभिनेता होंगे। अनुशासन के साथ-साथ उन्हें खुला माहौल भी दिया जाए तभी बच्चों की रचनात्मकता भी निखरेगी।

शिविर में बच्चों ने नाटक, गीत, क्लेमॉडलिंग तो सीखा ही। साथ ही उनमें सामूहिकता की भावना दिखने लगी थी। सिर्फ़ अपने लिए नहीं दूसरों के बारे में भी सोचना शुरू कर दिया था। जबकि शिविर में शामिल होते वक्त ऐसा नहीं था।

बिन पुस्तक जीवन ऐसा
बिन खिड़की घर हो जैसा

अनुराग बाल पुस्तकालय

मनोरंजक, ज्ञानवर्द्धक, उत्कृष्ट पुस्तकों का संग्रह, कला, साहित्य, संस्कृति, विज्ञान, खेलों आदि पर रोचक किताबें और पत्र-पत्रिकाएँ, प्रेरक जीवनियाँ, देश-विदेश का चुनिन्दा बढ़िया साहित्य

सोमवार से शनिवार, शाम तीन से सात बजे तक
डी-68, निरालानगर, (गोमती मोटर्स के सामने) लखनऊ-226020

अनुराग ट्रस्ट

अनुराग ट्रस्ट की दिलचस्प किताबें पढ़ो!

बाज़ का गीत	मक्सिम गोर्की	15 रुपये
एक छोटे लड़के और एक छोटी लड़की की कहानी		
जो ठण्ड में ठिठुर कर मरे नहीं	मक्सिम गोर्की	15 रुपये
नन्हा राजकुमार	आतुआन द सैंतेग्जूपेरी	40 रुपये
वांका	अन्तोन चेखव	15 रुपये
तोता	रवीन्द्रनाथ टैगोर	15 रुपये
काबुलीवाला	रवीन्द्रनाथ टैगोर	15 रुपये
पोस्टमास्टर	रवीन्द्रनाथ टैगोर	15 रुपये
दिमाग कैसे काम करता है	किशोर	20 रुपये
दो बैलों की कथा	प्रेमचन्द	20 रुपये
रामलीला	प्रेमचन्द	15 रुपये
लॉटरी	प्रेमचन्द	15 रुपये
बड़े भाई साहब	प्रेमचन्द	15 रुपये
मोटेराम शास्त्री	प्रेमचन्द	20 रुपये
हार की जीत	सुदर्शन	15 रुपये
बहादुर	अमरकान्त	10 रुपये
इवान	व्लादीमिर बोगोमोलोव	40 रुपये
आश्चर्य लोक में एलिस (नाटक)	लुइस कैरोल	25 रुपये
झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई (नाटक)	वृन्दावनलाल वर्मा	25 रुपये
दोन किहोते (नाटक)	सर्वान्तेस	20 रुपये
नन्हे गुदड़ीलाल के साहसिक कारनामे	सुन याओ च्युन	40 रुपये
उल्टा दरख्त	कृशनचन्दर	35 रुपये
चमकता लाल सितारा	ली शिन-थ्येन	50 रुपये

अनुराग ट्रस्ट के सभी प्रकाशनों के मुख्य वितरक — जनचेतना, डी-68, निरालानगर, लखनऊ-226020
जनचेतना, सी-74, एस. एफ. एस. फ्लैट्स, सेक्टर-19, रोहिणी, दिल्ली-110085
जनचेतना, जाफरा बाजार, गोरखपुर-273001